वर्ष 34 अंक : 3 14.5.2011 शनिवार (मई – जून) शुल्क – प्रति अंक : ₹ 10.00 वार्षिक : ₹ 50.00

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

अक्षरधाम की करन्सी है - भजन!

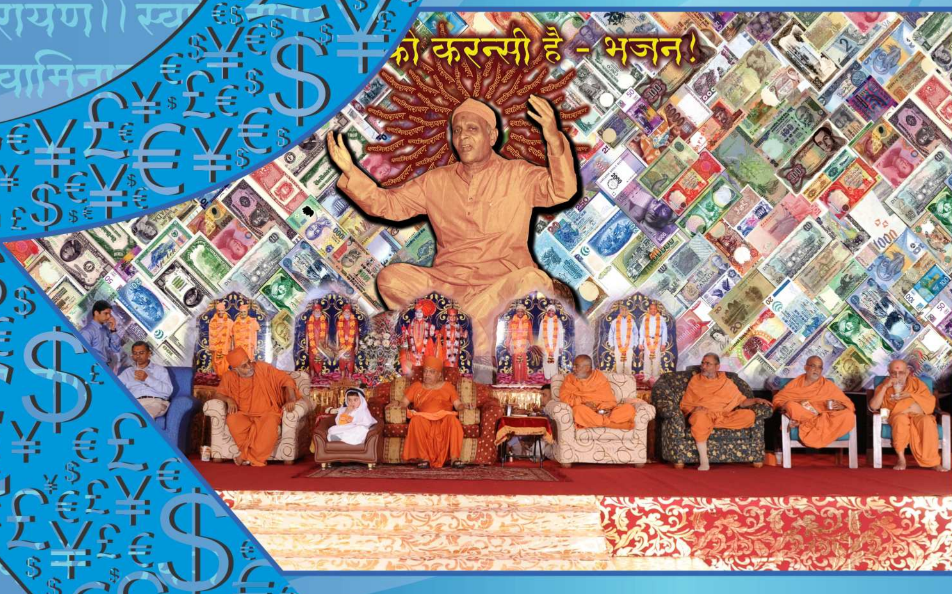

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्वधामगमन की रजत जयंती के उपलक्ष्य में ७२ घंटे की अखंड परिक्रमा

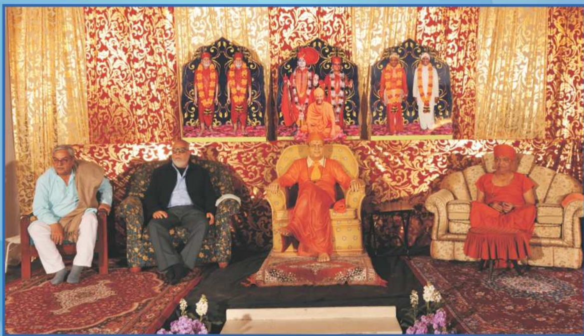

प.पू. गुरुजी के ७४वें प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

दिल में प्रेम भरा मीठा जननी-सा, शोभे सदा हास से....

वैशाख कृष्ण-१२ – गुरुवर्य योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन ! गुरुवर्य योगीजी महाराज ऐसी विभूति थे जिनमें अखंड ब्रह्म की अलमस्ती का सहज ही दर्शन होता, इसीलिए उन्हें कहा जाता– **'अलमस्त जोगी'** ! सच, भगवान स्वामिनारायण की गुणातीत परंपरा के वारिसदारों में गुरुवर्य योगीजी महाराज का साधुताभरा वर्तन ही अनेकों के लिए उपदेश रूप बना। निर्दोष हास से युक्त मुखारविंद, करुणाभरी आँखें, अमृत जैसी मिठास से भरी वाणी, महासागर की तरंगों जैसी उमंग से भरपूर प्रेम और वात्सल्य की इस विभूति के जिसने एक बार भी दर्शन किए, उसके मन में वह सदैव के लिए बस गए। 'निर्व्याज प्रेम' ही गुरुवर्य योगीजी महाराज की विशेषता थी। इसी कारण उनके सान्निध्य में आए मुक्त, उनकी प्रेमवर्षा में ऐसे भीग जाते कि जीवन की विकट परिस्थितियों में भी उनका उत्साह-उमंग कभी कम न होता।

सकारात्मक विचार का मूर्तस्वरूप यानि– **प्रत्यक्ष प्रभु को ही सर्व कर्ता मान कर सिर्फ भजन का ही आधार लेते गुरुवर्य योगीजी महाराज!** अनेक प्रकार के कष्टों, उपाधियों और भिन्न-भिन्न प्रकार की कठिनाइयों के बीच भी उनका मन कभी विचलित नहीं हुआ। आग बरसाती ग्रीष्म ऋतु हो या बर्फीली ठंड – सब उनके लिए एक समान था। वे कहते– *गर्मी में गर्मी नहीं पड़ेगी, तो कब पड़ेगी? सर्दी के मौसम में ठंड और वर्षाऋतु में बारिश होती ही है। ऋतुचक्र अपना काम करता रहे और हमें भजन, भक्ति, सेवा करते रहना चाहिए।*

उनके जीवन में माहौल हमेशा विपरीत रहा, फिर भी उन्हें कभी कुछ भी आड़े नहीं आया। वे ठाकुरजी की सेवा, भोजन पकाने की सेवा, बीमार संतों की सेवा के साथ-साथ मंदिर की नींव भरने की सेवा में हमेशा तत्पर रहते और मंदिर निर्माण कार्य के हेतु से आए मज़दूरों को संभालने की सेवा करते हुए भी सदा ब्रह्मानंद की मस्ती में निमग्न रहते...

प्रभु प्राप्ति की अलमस्ताई से भरपूर इस विभूति के प्रेम का आकर्षण ऐसा था कि कई नवयुवक अपनी वार्षिक परीक्षा समाप्त होते ही घर से निकल पड़ते और गुरुवर्य योगीजी महाराज जहाँ विचरण कर रहे होते, वहाँ पहुँच जाते... दरअसल उनकी एक योजना कहें या पारदर्शक दृष्टि थी कि उन्होंने आगे आने वाले ज़माने को देखते हुए पढ़े-लिखे युवकों को साधु बनाने का संकल्प किया था। जैसा कि करीब २५० वर्ष पूर्व मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की बातों में लिखा है कि *पत्ता-पत्ता स्वामिनारायण का जाप करेगा...* और सच आज पूरे विश्व में स्वामिनारायण संप्रदाय को ऐसा विकसित होता देख रहे हैं। तत्कालीन समाज इस बात की गहराई को शायद ही समझ पाया होगा। परंतु, बापा को भगवान का स्वरूप मान कर, उनकी मर्जी जान कर, इस अभिप्राय की भक्ति में प.पू. काकाजी ओतप्रोत हुए और कई युवकों को इस दिशा में प्रेरित किया। अगर प.पू. काकाजी ने बापा के स्वरूप की सम्यक् पहचान न कराई होती, तो शायद *'बापा एक भले साधु हैं'*, इस भूलभुलैया में ही सब अटके रहते। संबंध में आए युवकों से प.पू. पप्पाजी कहते– *बापा जैसे भव्य स्वरूप के वचन से साधु हो जाओ, वे एक-एक को भगवान जैसा बना देंगे* और... ५० वर्ष पूर्व, **११ मई १९६१–गुरुहरि योगीजी महाराज के प्राकट्योत्सव के मंगलकारी दिन गढ़डा में पढ़े-लिखे ५१ युवकों को भागवती दीक्षा दी गई।**

बापा की इस कल्याण योजना में ही हम सभी के

प्राणाधार **प.पू. गुरुजी** भी **भागवती दीक्षा** प्राप्त करके 'साधु मुकुंदजीवनदास' एवं बापा के प्यारे 'मकंदजीवन' बने। अबकी बार दिनाँक के मुताबिक **११ मई** को एवं गुरुहरि योगीजी महाराज के प्राकट्योत्सव की तिथि के मुताबिक **२९ मई को** उन्हें दीक्षा लिए **पचास वर्ष** पूरे हो रहे हैं और... साथ ही इसे कैसी सांकेतिक बात कहा जाए कि अबकी ही **चैत्र शुक्ला १३ के मुताबिक १६ अप्रैल को गुरुवर्य योगीजी महाराज के दीक्षा दिन की शताब्दी यानि १०० वर्ष पूर्ण हुए।** ये दोनों ऐतिहासिक प्रसंग हमारे जीवन के लिए अद्भुत स्मृति का स्रोत हैं।

सच, प.पू. बापा कैसी आर्षदृष्टा विभूति थीं, यह अब ख्याल पड़ता है क्योंकि पढ़े-लिखे युवकों को साधु बनाने की उन्होंने जो क्रांतिकारी पहल की, वही आज के समय की मांग भी है। प.पू. गुरुजी के संपर्क में आने के बाद, आज के युग से प्रभावित, कई मुक्तों को ऐसा कहते भी सुना है कि उन्होंने सोच रखा था कि *यदि गुरुजी को अंग्रेजी भाषा आती होगी, तो ही वे उन्हें अपना 'गुरु' स्वीकार करेंगे।* एक दृष्टि से यह बात बेतुकी-सी लगती है, क्योंकि आध्यात्मिकता के स्तर पर भाषा कोई मायने नहीं रखती।

लेकिन, राजधानी दिल्ली में पाँच भेद में काम करना रहता है। मंदिर के कार्य हेतु राजनेताओं व वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों से मिलना रहता है। कोई संदेह नहीं कि कार्य तो प्रभु की शक्ति ही करती है, लेकिन प्राप्त की हुई शिक्षा द्वारा भी प.पू. गुरुजी उन्हें भगवान स्वामिनारायण एवं गुणातीत स्वरूपों में जोड़ कर प्रभु के संबंध का एहसास कराने के लिए आज यहाँ निमित्त बने हैं।

प.पू. गुरुजी की चंचल व चपल प्रकृति, नटखट क्रियाएँ तो हमें भगवान श्री कृष्ण की बाललीलाओं का सहज स्मरण कराती हैं। वे खूब चालाक, प्रखर बुद्धि वाले एवं विचक्षण होते हुए बहुत ही प्रेमी, संवेदनशील, निष्कामी, स्पष्टवक्ता एवं निखालस भी हैं। **प.पू. काकाजी के शब्दों में उनमें मन है ही नहीं, सीधा ही चित्त है।** उनकी मेमोरी फोटोग्राफिक है। इसी कारण १७ वर्ष की आयु में मुंबई के सुंदराबाई हॉल में जब पहली बार गुरुवर्य योगीजी महाराज एवं प.पू. काकाजी के दर्शन किए, तो वे फट उनके भीतर में बैठ गए और 'लव एट फर्स्ट साईट' हो गया। जिस गति से उनकी वृत्ति जगत में रहती, उसी रफ्तार से उन्होंने इन स्वरूपों से संबंध दृढ़ कर लिया और प.पू. बापा के वचन से, प.पू. काकाजी में अनन्यभाव रखते हुए, 'साधु' की पद्वी लेने के लिए अग्रसर रहे। शुरुआत से ही प.पू. काकाजी के छोटे से वचन का मनन-चिंतन करके, अंतर्दृष्टि करके, भजन का उपाय लेकर आध्यात्मिक राह पर आगे बढ़ते रहे हैं। सच कहें तो प.पू. सोनाबा के दिव्य प्रेम, प.पू. काकाजी के प्रति उनके अनन्यभाव, प.पू. पप्पाजी की दृष्टि व बापा के संकल्प और स्वयं की तीव्र 'सुरुचि' एवं असाधारण बुद्धिमत्ता के कारण प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की सेरेछाया में पले, प.पू. गुरुजी के आज हमें 'गुणातीत भावना' से युक्त साधु के रूप में दर्शन हो रहे हैं।

बापा ने संकल्प किया था कि दिल्ली में श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज बिराजें और उत्तर भारत में उनका संदेश व्यापक बने। जिस प्रकार जूनागढ़ मंदिर के लिए श्रीजी महाराज ने ५०० परमहंसों में से गुरु गुणातीत को पसंद किया, उसी प्रकार, बापा के अभिप्राय को पकड़ कर आर्षदृष्टा प.पू. काकाजी ने १९६८ में इस कार्य हेतु प.पू. गुरुजी को पसंद किया और प.पू. गुरुजी ने भी श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज को

यमुना के किनारे पर बिठा ही दिया। इस प्रकार बापा के 'दिलीफ़'-'मकंद' को प.पू. काकाजी ने बना दिया उत्तर के मुक्तों के दिलों का बेताज बादशाह – 'गुरुजी'!

दिल्ली में अभिप्राय की भक्ति करते हुए प.पू. गुरुजी, संबंध में आए मुक्तों की व्यावहारिक-आध्यात्मिक प्रगति कराते हुए, कौटुंबिक भावना को विकसित करने के लिए निरंतर प्रत्यनशील हैं। उनका कार्य है – पहले स्नेह देकर सेवक के दिल में जगह लेना, उसे जीतना और फिर धीरे-धीरे उसका जगत छुड़वा कर भीतर की सफाई करके, प्रभु सम्मुख कर देना। ऐसी ब्राह्मीशक्ति उनके भीतर अखंड कार्य कर रही है।

प.पू. स्वामिजी के शब्दों में– ***संबंधयोग से जीने वाले साधकमात्र के लिए गुरुजी का जीवन आदर्शरूप है।*** वचनामृत प्रथम-५८ को सिद्ध करके 'गुणातीत साधु की डिग्री' ले लेने के बावजूद, वे अपनी ओर निरंतर साधक-सेवक की नज़र रखते हैं और संबंध वालों को ब्रह्मनियंत्रित मान कर व्यापक में प्रभु की सत्ता का दर्शन करते हैं। दरअसल यही है 'गुणातीत अस्मिता'!

आज समग्र गुणातीत समाज में, गुरुहरि योगीजी महाराज, प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. स्वामिजी, का अंतरतम मार्मिक कार्य करके अपने वर्तन से शोभा बढ़ा रहे हैं। देखा जाए तो शिष्य अपनी ओर से गुरु को अंतर की ठंडक प्रदान करे और... गुरु के हृदय से आशीर्वाद सहज फिसल जाएं, इसी में सेवक के जीवन की धन्यता है। **प.पू. काकाजी** ने प.पू. गुरुजी को समय-समय पर ऐसे आशीर्वाद लिख कर भेजे। लेकिन आख़िर में एक पत्र में तो ऐसा भी लिख दिया–

अपने बेटे *को क्या आशीर्वाद देने होते हैं...*

इसी प्रकार, विद्यानगर में **प.पू. पप्पाजी** के मुँह से भी उद्गार निकल गए थे – ***मेरा लड़का*** *वहाँ बैठा है...*

प.पू. पप्पाजी को भी प.पू. गुरुजी पर कैसा भरोसा होगा! अक्षरधाम की दिव्य विभूतियाँ जब ऐसा कहें, इससे बढ़ कर प्राप्ति क्या हो सकती है! और... यह प्राप्ति प.पू. गुरुजी ने ऐसी अद्भुत भक्ति अदा करके हासिल की!

और... ५० वर्ष से धारण किए हुए भगवे कपड़ों का रंग-प्रभु का रंग-प.पू. गुरुजी आज दिल्ली जैसी मायानगरी में रहते मुमुक्षुओं को लगा रहे हैं। जल-कमलवत् रहते हुए, ये 'बृहद् वैरागी' साधुता से, गुरु की शोभा बढ़ा रहे हैं। चाहे वे बाह्य व आंतरिक कितने ही प्रकार के द्वंद्व, स्पंदन, उतार-चढ़ाव, ज्वार-भाटे या विपरीत संजोगों से गुज़रे होंगे, पर वे प.पू. काकाजी से चिपके रहे। मन-बुद्धि को टोटल ठुकराने के लिए उन्होंने एक ही शस्त्र लिया 'मालारूपी सुदर्शन चक्र' का! प.पू. काकाजी के वचन में 'योगी' की ही सत्ता-सामर्थ्य को निहार कर अध्यात्म पथ पर अग्रसर रहते हुए वे जंगम तीर्थ बने हैं और 'संकल्प से' सबका जतन कर रहे हैं। संबंध वाले सभी के आत्मीय, सुख-दुःख के साथी बने हैं।

कई चैतन्यों की आराध्यमूर्ति बने प.पू. गुरुजी की गोद में पला बढ़ा समाज आज उनके माहात्म्य का यथार्थ दर्शन करा रहा है। गुरुहरि प.पू. काकाजी की कृपा झेल कर स्वर्ण पात्र बने प.पू. गुरुजी को कोटि-कोटि धन्यवाद!

तो आओ, **गुरुवर्य योगीजी महाराज के प्राकट्योत्सव**, उनकी **दीक्षा के शताब्दी वर्ष** एवं **प.पू. गुरुजी की दीक्षा की स्वर्ण जयंती** पर वर्षों पहले बापा द्वारा अफ्रीका में की गई निम्न कथावार्ता का **मर्म पकड़ कर**, उनकी अपेक्षाओं पर खरे उतरने का संकल्प करें...

(अ) संप-एकत्वभाव हो, तो विपरीत माहौल भाग जाता है और गुणातीत ज्ञान सिद्ध हो जाता है। सो, ज्ञान को स्वयं पर ही लेकर सब लग ही पड़ें। अब राह देखने जैसी नहीं है। वर्ना रह जाएंगे और मूर्ति सिद्ध नहीं होगी। सो अब तो केवल भजन ही कर लेने जैसा है। अन्य काम भले फुरसत से करें, राह देखें और आराम से करें, लेकिन, इस साधु का समागम करने में मन भागता भी फिरे, तब भी दृढ़ संकल्प करके अब ज्ञान प्राप्ति के लिए कथावार्ता में मन पिरो दें। सभी को गुणातीत करना है और जल्दी से यह काम पूर्ण हो, तो सत्संग का दिव्य सुख आएगा। वह मिला तो है, लेकिन वह ले नहीं पाते? क्योंकि सत्पुरुष की महिमा नहीं है और उनकी क्रिया में भी हमारे मन में मनुष्यभाव आया ही करता है; इसलिए, सुख नहीं आता। तो, दिव्यभाव दृढ़ करते जाना। ब्रह्मदृष्टि ही बनाए रखना।

(ब) महिमा समझने में क्या बाधा रूप होता है?

उत्तर –देह तो आड़े आता ही है, लेकिन इसके अतिरिक्त और कुछ भी है। सत्पुरुष की क्रिया हमें जँचती नहीं। देह से, मन से, जीव से (सत्पुरुष के साथ) अंतराय रहता है। सत्पुरुष हमारी मान्यता बदलने का यत्न करें, तो उसमें शंका होती है। सत्पुरुष दिन को रात कहे और उसमें भी हम शंका न करें–यह सही। लेकिन, किसी बात का निर्णय करके ही आए, सो उसके मुताबिक कहना पड़े। पर अपना कोई निर्णय ही न हो, यह बात अलग पड़ती है। मैं अक्लमंद हूँ ऐसा जो मान बैठे, उसे बुद्धि बहुत दुःख देती है। वह अपनी बुद्धि का दायरा नहीं छोड़ पाता। बुद्धिशाली अपनी बुद्धि लगा-लगा कर सत्पुरुष में मनुष्यभाव लेता रहता है और दूसरी ओर, भोला व्यक्ति कुछ समझ ही नहीं पाता। सो, निष्कुलानंदस्वामिजी ने कहा है कि सयानापन और भोलापन दोनों छोड़ कर दास के दास होकर रहें! **साथ में रहते हुए महिमा समझना भी एक गुत्थी है।** इकट्ठे रहें तब पता चलता है, वर्ना दूर रहते हुए कुछ भी हासिल नहीं होता। कोई कुछ भी क्यों न माने, लेकिन ऐसे-ऐसे प्रसंग आ जाते हैं कि मनुष्यभाव आ ही जाता है।

'निर्दोषबुद्धि' कैसे कायम रहे? गलत किया हो, तब भी सत्पुरुष के प्रति उत्तम से उत्तम भाव रहे, उसे 'निर्दोषबुद्धि' कहा जाता है। शास्त्रीजी महाराज ने बंजर जमीन खुदवाई, कइयों के सर चकरा गए और वे बोले कि स्वामिजी कुछ समझते ही नहीं। लेकिन आज वह ज़मीन लाखों रुपये की हो गई। अनेकों लोगों का उससे जीवन निर्वाह होता है। इस प्रकार सब कुछ अच्छा ही हुआ है, फिर भी मनुष्यभाव आ गया। **खरे में तो सभी को अच्छा भाव रहता ही है, लेकिन खोटे में भी रहे, उसे पक्का कहा जाता है। कसनी सह ले, जताए भी नहीं उसे ही खरा कहा जाता है।**

प.भ. बहेचरभाई बोले– *पहले तो उत्तम कोटि का हो और अनेक लोगों को भगवान की निष्ठा करवाता हो, उसकी मति भी भ्रष्ट हो जाती है–इसे क्या समझें?*

प.पू. स्वामिजी बोले–*उसमें ऐसा स्तर आ गया, स्तर।* सत्संग करते हुए सात स्तर आते हैं। मनुष्यभाव का स्तर, दिव्यभाव का स्तर, एकांतिकभाव का स्तर – ऐसे कई स्तर आते हैं। जो स्तर, जिस समय आ

जाए, वैसा हो जाता है। पहले–सत्संग में आए, तब दिव्यभाव रहता है, अहोहोभाव प्रतीत होता है। लेकिन अधिक समय साथ में रहते-रहते, समय बीतने पर, व्यावहारिक क्रिया देखते हुए, मनुष्यभाव आ जाता है। सो, हर एक क्रिया में– *'गुणातीत सत्पुरुष गुणातीत भाव में ही वर्तते हैं, मुझे एकांतिक धर्म सिद्ध कराने के लिए ही यह सब कुछ करते हैं, उनमें कोई दोष देखने जैसा नहीं है'* –ऐसा माना जाए, तब जाकर अखंड निर्दोषबुद्धि रह पाती है। अमदावाद के एक भक्त जब भी ब्रह्मनिरुपण की बातें सुनते, तभी ऐसा स्तर आ जाता कि कहने लगते – *लाखों रुपये दे दूँ।* लेकिन फिर स्तर बदल जाने पर स्वामी को कहने लगते कि *मेरे पैसे लौटा दो।* **पत्थर के ऐसे स्तर नहीं आए, उसे ही 'ब्रह्मस्थिति' कही जाएगी।** इस हेतु अनिवार्य रूप से समागम की जरुरत है। 'स्वामी का संबंध वाला है' – यूँ हर एक की महिमा जानेंगे, तो अपना काम हो जाएगा। **जैसी मर्यादा स्वामी की रखी जाती है, वैसी ही उनके संबंध वालों की मर्यादा रखी जाए तो उच्च कोटि में चले गए मानना।** वर्ना तो प्रगट स्वरूप की महिमा यथार्थ–जैसी है वैसी ही जानी–ऐसा नहीं कहा जाएगा! संबंध वाला किसे माना जाए? तो जो स्वामीरूप हुआ हो वह। फिर प.पू. स्वामीबापा ने कहा – **प्रगट के संबंध वाले पहचाने जाएँ वही पक्का ज्ञान, वही परिपक्व निष्ठा। और ऐसे हरिभक्तों की अपार महिमा समझी जाए तो निर्दोषबुद्धि दृढ़ हुई कहा जाए।** भीतर में अहोहोभाव नहीं रहता, यही बड़ी कसर है। यह कसर समागम करके टालनी है!

(गुरुहरि प.पू. काकाजी द्वारा संपादित
गुरुवर्य योगीजी महाराज द्वारा अफ्रीका में की कथावार्ता)

✡✡✡

गुणातीत समाज के प्राणपुरुष के प्राकट्य पर्व पर....

बृहद् गुणातीत समाज के प्राणपुरुष **प.पू. काकाजी महाराज का प्रागट्य दिन – १२ जून!** प.पू. काकाजी यानि निरपेक्ष प्रेम–निर्दोषबुद्धि की क्षितिज। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज द्वारा मूर्त की गई अक्षरपुरुषोत्तम की युगल उपासना और गुरुवर्य योगीजी महाराज के हृदयगत अभिप्राय को जान कर, उसे संघनिष्ठा से फैलाने की पहल प.पू. काकाजी ने की, इस बात से कोई अनभिज्ञ नहीं है। ऐसी अनोखी भक्ति करके प.पू. काकाजी ने गुरुवर्य योगीजी महाराज को केवल राजी ही नहीं, बल्कि अखंड वश किया था।

इसके अतिरिक्त हम से किसी भी प्रकार की अपेक्षा रखे बिना, हमें ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने का एकमात्र उद्यम प.पू. काकाजी ने किया। इस हेतु वे हमारे साथ, हमारी कक्षा पर आकर, ओतप्रोत हुए, ताकि हमारे जड़तंत्र में से दोषों को निकाल कर, प्रभु प्रगटा कर, जल्द से जल्द अक्षरधाम का सुख जीतेजी प्राप्त करवा दें। आख़िरी सांस तक उनकी यही एक चाहना रही। वे कहते–मुझे तुम्हें आसानी (लहेजत) से अक्षरधाम देना है। साथ ही, प.पू. काकाजी ने बापा को रोम-रोम में अखंडित कैसा धारा होगा कि बापा से स्थूल रूप से दूर रहते हुए, उनके संबंध वालों को बापा की कमी उन्होंने कभी महसूस ही नहीं होने दी।

सच, आध्यात्मिक समाज के प्रणेता गुरुवर्य योगीजी महाराज ने प.पू. काकाजी एवं प.पू. पप्पाजी

के आधार पर जो नींव रखी, उसी पर आज सारा गुणातीत समाज टिका है और... मानव में से महामानव बनाने की बापा की योजना न केवल क्रियान्वित रही, बल्कि प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब एवं प.पू. दिनकरभाई के रूप में एक ही साथ, एक ही प्लेटफार्म पर, ऐसे चैतन्य मंदिर बन गए कि जिससे गुरुवर्य योगीजी महाराज के सामर्थ्य और क्रांतिकारी विचारों का दर्शन होता है।

हमें इन स्वरूपों के साथ लगाव तो है, पर जैसा कि प.पू. काकाजी अकसर कहते– *निर्विचार, निर्वितर्क और निर्द्वंद हुए बिना किया गया लगाव मायिक ही है और उसी मायिकभाव को दूर करने के लिए प्रगट की आज्ञा में रहना अनिवार्य है, उसके बिना ऐसा लगाव होना संभव ही नहीं।* साथ ही साथ, जैसा कि प.पू. काकाजी कहते– *'स्वरूप को ऊपर-ऊपर से नहीं, तत्त्व से पकड़ो।'* इस हेतु प.पू. काकाजी साधना मार्ग के अनगिनत बारीक-बारीक रहस्य, मर्म और चाबियाँ सबको समय-समय पर देते रहे। **१९६८** में भगवान से संबंध कर लेने के जो प्रकार उन्होंने बताए, वे भी अपने आप में खूब रहस्य लिए हुए हैं। आओ, इस **रहस्य को पकड़ कर**, निर्दोषबुद्धि युक्त आध्यात्मिक संबंध दृढ़ करके, उनकी **'दिव्य विरासत'** को पाएँ!

भगवान के साथ संबंध मुख्यतः **चार** प्रकार से है।

जैसे कि, राजा के आश्रित **नौकर** का राजा के साथ 'चाकर' के तरीके का संबंध होता है।

बड़े **अमलदार** का राजा के साथ अलग तरीके का संबंध होता है

और

पुत्र का संबंध राजा के साथ **'वारिस'** का होता है।

इसी प्रकार, गुणातीत ज्ञान के 'वारिस' का संबंध **निर्दोषबुद्धि** वाले का होता है।

सत्संग से 'एक निष्ठा' एवं 'आत्मबुद्धि' युक्त संबंध कर लेने के पश्चात्,

ब्रह्मरूप होकर, प्रगट भगवान में सम्यक् प्रकार से जुड़ जाने पर ऐसा संबंध होता है।

ऐसा संबंध होने के बाद सत्पुरुष के साथ किसी भी प्रकार से अंतराय नहीं रहता।

सो, खरे भगवदी का प्रसंग करके ऐसा 'अंतर का संबंध'

और

आख़िरकार 'आध्यात्मिक संबंध' गुरुकृपा से जीतेजी ही हम दृढ़ कर लें।

जिससे कि हम निर्भय, निश्चिंत और भय रहित रहते हुए अखंड शांति युक्त अक्षरधाम का सुख प्राप्त करें।

सो, अपनी साधना की पूर्णाहुति कर लेने की ही तान रखनी।

प्रगट गुरुरूप हरि ने हमें यह 'मौज' में दिया है;

तो उसके लिए पात्र बन कर, सदा सुखी होने के लिए, सभी लगन लगाएँ–यही अभ्यर्थना।

– प.पू. काकाजी महाराज, १९६८

✡✡✡

स्वामिश्रीજી

सौरभ - ३०

પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાક્ટ્યપર્વ નિમિત્તે તેઓ સાથેના આપણા પ્રસંગો-અનુભવો કે તેમના પ્રત્યેના ભાવો લખી મોકલવા 'ભગવત્ કૃપા'માં **'પ.પૂ. કાકાજીની સૌરભ'**ના સ્તંભ હેઠળ પ્હેલવ્હેલું જ્યારે વાંચ્યું હતું, ત્યારથી જ ઈચ્છા હતી કે હું પણ કાંઈ લખું. આ માટે જ્યારે ય પેન ઊપાડી છે, ત્યારે ત્યારે વિચારોમાં—સ્મૃતિઓમાં ખોવાઈ ગયો છું. એ સ્મૃતિઓને કે અંતરના ભાવોને શબ્દો આપવા, તે ગમતું નથી અને સાથોસાથ તેમની પ્રભુતાને-સાધુતાને શબ્દો કે ભાવનાઓની પરિધિમાં સમેટવી સંભવ જણાતું પણ નથી. અત્યારે લખવા બેઠો છું, પણ આપણા સૌ પર નિરંતર વરસતા-નીતરતા તેમના પ્રેમની અને પ્રભુના વાત્સલ્યથી ભરેલી તેમની આંખોની સ્મૃતિ થયા કરે છે. લખવું શું— તે કાંઈ સમજાતું નથી. આંખો ભીની થઈ જાય છે.

આપણા મંદિરની મૂર્તિપ્રતિષ્ઠા વખતે પ.ભ. કૌશિકભાઈ સેવાર્થે આવતા. તેને જોવા કે એ એવા તે ક્યા મંદિરમાં જાય છે કે રાત-દિવસ ત્યાં સેવામાં જ અટવાયેલો રહે છે. ઘરની કે જૉબની કોઈ ફિકર નથી. હું મંદિરે તેમને જોવા આવ્યો, ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીના દર્શન થયા. સાધુ-સંતો પ્રત્યે મને પ્હેલેથી કોઈ ભાવ નહીં, અભાવ પણ નહીં. ભાવપૂર્વક તેમને નમું પણ નહીં. પ.પૂ. ગુરૂજીના દર્શન કર્યા તો સ્વતઃ જ-ઈચ્છા વિરૂદ્ધ, પણ દિલથી નમી જવાયું!

તે પછી કોક-કોક વાર મંદિરે આવતા. પૂ. સુહૃદ્સ્વામીએ બનાવેલી ગરમા-ગરમ ખિચડી જમતાં. ઘણાં દિવસો આમ વીતી ગયા. પછી પ.પૂ. ગુરૂજીએ એકવાર કહ્યું કે 'ભદ્રાયુ, તમારે શનિવાર-શનિવાર મંદિરે આવવું.' અમારે એ દિવસોમાં લગભગ દર શનિવારે વીકએન્ડ પાર્ટી થતી અને એ પાર્ટીને કે તેમાં આવનાર મિત્રોને છોડીને મંદિરે આવવું ખૂબ કઠિન હતું. પ.પૂ. ગુરૂજીનું મને આ પ્હેલું જ સૂચન હતું. તેમને ના પાડી શકાય નહીં. પ.પૂ. ગુરૂજીએ ખૂબ કૃપા કરી. મને કે કમને, મારી પાસે તેમણે તેમનું ગમતું કરાવી લીધું. જે છોડવાનું હતું તે છોડાવી દીધું અને જે જરૂરી હતું તે કરાવી લીધું.

સત્સંગમાં આવતો થયો, તે પહેલા અને પછી, પૈસે-ટકે, કામ-ધંધે સારૂં હતું. પણ થોડા વખતમાં જ ખૂબ પડતી આવી ગઈ. પ.પૂ. ગુરૂજીને કે પ.પૂ. દીદીને આ બાબતે કશું કહ્યું નહીં, પણ તેમને ખ્યાલ પડી ગયો. આપણે તેમને પોતાના માન્યા હોય કે નહીં, પણ તેમણે આપણને પોતાના માન્યા છે. તેથી આપણને તેઓ વિષમ પરિસ્થિતિમાં જોઈ શકતા નથી. પ.પૂ. દીદી મારફત પ.પૂ. ગુરૂજીએ અમને કહેવડાવેલું કે *'પૈસા વિગેરે જ્યારે જોઈએ કરે તો કહેવું. જે કાંઈ છે તે હરિભક્તોનું જ છે.'* આમ અમારા નબળા દિવસોમાં તેમણે ખૂબ બળ આપ્યું. એક મિનિટ માટે પણ ન્હોતું લાગ્યું કે શું થશે. સતત તેઓ ભાસ કરાવતા રહ્યા કે તે આપણી પડખે જ છે.

આજે લગભગ ૨૦ વરસ થવા આવ્યા, પણ આપણા મંદિરનું બાંધકામ અધૂરૂં છે અને આપણને એ પણ ખબર છે કે પ.પૂ. ગુરૂજી ધારે તો તેમના સંકલ્પે જ આવા ઘણાં મંદિરોનું નિર્માણ થઈ જાય.

પણ, તેમનો ઉદ્દેશ જ કાંઈ જૂદો છે. મંદિરના નિર્માણ કરતાં અમ હરિભક્ત–કુટુંબીજનોની જરૂરિયાતો તેમને માટે વિશેષ છે અને એથી ય વિશેષ તેમનો પ્રયાસ કે હેતુ એ જણાય છે કે **આ મંદિરના નિર્માણની સાથોસાથ દરેક હરિભક્ત-કુટુંબીજનનું અંતરનું મંદિર પણ ઘડાતું જાય.** ખૂબ-ખૂબ ધન્યવાદ છે આવા શિલ્પકારને!

એકવાર લગભગ ૧૫૦-૨૦૦ હરિભક્તોને પ.પૂ. ગુરૂજી હરિદ્વાર પ.પૂ. કાકાજીની પ્રસાદીની જગ્યાઓના દર્શને લઈ ગયેલ. ત્યાં અમે સૌ હરિભક્તો 'લક્ષ્મણ ઝૂલા' થઈ બજારમાં ને બધે ફરતા હતા. તે વખતે હરિદ્વારમાં બાવાઓની ખૂબ ગર્દી હતી. તેમનું કાંઈ સમ્મેલન જેવું હતું. ત્યાં વાતો પણ થતી હતી કે બાવાઓ નાના-નાના છોકરાંઓને ઊપાડી જાય છે. તેવામાં અમારો નાનો દીકરો વૈભવ જે ત્યારે લગભગ ૮-૯ વરસનો હશે, તે બધાંથી છૂટો પડી ગયો અને જડતો નથી એવા સમાચાર મને મળ્યા. હું ખૂબ જ ગભરાઈ ગયો. સાથી ભાઈઓ અને હું જૂદા-જૂદા રસ્તે વૈભવને શોધવા માંડયા. ગોતતા-ગોતતા કલાક ઊપર થયો, પણ કાંઈ પત્તો ખાય નહીં. બધાં બ્હેનો, વડીલો, બાળકોએ ધુન-પ્રાર્થના શરૂ કરી દીધેલી. બસમાં બેઠા-બેઠા બધાંએ લગભગ કલાક ઉપર ધુન કરી હશે. મને ધુન-ભજનમાં કાંઈ સમજ નહીં. આમ-તેમ રખડી-રખડી થાકી ગયો અને પ્રભુ સાંભરી આવ્યા. આંખો રડુ-રડુ થઈ ગઈ. ત્યાં જ પોલિસ થાણું દેખાયુ. પૂછયું, તો ખબર મળી કે આવો એક છોકરો અમુક જગ્યાએ પોલિસની દેખરેખમાં બેસાડયો છે. તમે જોઈ લ્યો અને... એ વૈભવ જ હતો!

કહેવાનો અર્થ એ કે–પ.પૂ. ગુરૂજીએ જબરજસ્તીથી પણ, પ્રસંગ યોજી અને તેમાંથી બ્હાર કાઢીને, ભજનનો–પ્રાર્થનાનો આધાર લઈ દરેક મુશ્કેલીને ઊકેલવાની અને દરેક પ્રવૃત્તિ કરવાની, મૂળભૂત વાત શીખવાડી. વળી, **દરેક હરિભક્તનું દુઃખ સૌનું સહીયારું છે, એના દર્શન આવા પ્રસંગ યોજીને પણ કરાવ્યા.**

વર્ષો પહેલાં સભામાં મેં વાત કરેલી કે કોક-કોક વાર નાની-નાની વાતોથી પણ ડિસ્ટર્બ થઈ જવાય છે. જેમ કે–

'કોઈ ફંકશનમાં જવા માટે અમુક કપડાં પહેરવા મેં નક્કી કર્યું હોય અને જ્યારે કપડા બદલવા-કરવા જાઉં, ત્યાં મીસીસે બીજાં જ કપડાં મૂકયા હોય! આવી નજીવી વાતનો પણ સહજ સ્વીકાર થતો નથી અને ડિસ્ટર્બ થઈ જવાય છે.'

સભા પછી પ.પૂ. ગુરૂજીએ સમજાવ્યું કે *'આવુ કાંઈ પણ બને, ત્યારે જો ભદ્રાયુ એમ ધારે કે આ સૂચન મને દીદીએ કર્યું હોત તો ? અને પ્રીતિ એમ વિચારે કે આમ કરવાનું મને ગુરૂજીએ કહેવડાવ્યું હોય તો ? કેટલી સરળતાથી અને ઉમંગથી એ વાતનો કે સૂચનનો સ્વીકાર થઈ જાય.'* આમ દરેક સંબંધની કડી રૂપે પ.પૂ. ગુરૂજી કે પ.પૂ. દીદીને કેવી રીતે જોવા અને સુહૃદ્ભાવના મૂળભૂત સિદ્ધાંતે ઘર-સંસારમાં પણ કેમ રહેવું એની નાની-નાની સૂઝ વ્યક્તિગત રીતે પણ તેઓ આપતા રહે છે.

લગભગ ત્રણ વરસ પહેલાં અમારા મોટા દીકરા આશિષના લગ્ન હતા. જે દિવસે લગ્ન હતાં,

તે રાતે ઠંડી ખૂબ હતી અને લગ્નનું વેન્યૂ ઘણું દૂર–ગુડગાંવમાં હતું. તેથી અમુક હરિભક્તોએ પ.પૂ. ગુરૂજીને પ્રાર્થના કરી કે *'ઠંડી ખૂબ છે અને રાત્રે બહુ મોડું થઈ જશે. સૌ સંતો, હરિભક્તો અને બ્હેનો ત્યાં જઈ જ રહ્યા છે, તેથી તમે આ શ્રમ ન લો તો સારૂં.'* પણ પ.પૂ. ગુરૂજી કહે– *'આપણાં છોકરાઓ માટે તો મારે ગમે ત્યાં અને ગમે ત્યારે જવું પડે, તો પણ હું જાઉં.'* ભક્તો પ્રત્યેની તેમની આવી ભક્તિ-યોગી પરિવાર પ્રત્યેની આવી આત્મીયતા જોઈ આંખો ભીની થઈ જાય છે. કાકાજી પ્રત્યેની ભક્તિ અદા કરવાનો કોઈ પણ લ્હાવો તેઓ જતો નથી કરતા.

થોડા મહીના પ્હેલાં, ગાંધી નગર મારા બ્હેનના દીકરાનું લગ્ન હતું. બ્હેન-બનેવીએ કહ્યું કે લગ્નમાં પૂ. દૃષ્ટિ દીદી અને પૂ. પરછાઈ દીદી–જેમને પ.પૂ. ગુરૂજીએ ખૂબ કૃપા કરી અમને બન્ને ભાઈઓને દીકરીઓ તરીકે આપી છે–તેઓ પણ આવી શકે તો સારૂં. મેં કહ્યું કે તમે પ.પૂ. ગુરૂજીને ડાયરેક્ટ જ પૂછી જુઓ. તેમણે પ.પૂ. ગુરૂજીને ફોન કર્યો તો પ.પૂ. ગુરૂજીએ તરત જ કહ્યું કે *'એમણે તો ઘરના પ્રસંગે આવવું જ પડે ને? જરૂર આવશે.'* પૂ. પરછાઈ દીદીની તબિયત સારી ન હોવા છતાં, પ.પૂ. ગુરૂજીએ બન્ને બ્હેનોને ત્યાં મોકલ્યા. જગતની દૃષ્ટિએ જોઈએ તો–બ્હેનોને ન મોકલ્યા હોત, તો પણ ચાલતે; પણ જગતની કે લોકવાયકાની પરવાહ કરતાં પ.પૂ. ગુરૂજીને કદિય જોયા નથી. બસ! કેવી રીતે ભક્તો રાજી થાય છે–એ જ લગન.

પ.પૂ. ગુરૂજી, તમે અમારા જીવનમાં કોઈ વાતની ઉણપ રહેવા દીધી નથી. અમારા સ્વભાવ-પ્રકૃતિ, બેદરકારી-આળસ કે જડતા બધું ગણ્યા વગર તમારો સંબંધ જ આપ્યા કર્યો છે. એ સંબંધ માટે હું લાયક બનું. તમને જે નથી ગમતું તે વ્હેલી તકે છોડી દઉં અને તમારા ૭૫માં પ્રાકટ્ય દિવસ સુધીમાં તમારા ગમતામાં રહતો થઈ જઉં તેવા આશિષ આપશો.

– ભદ્રાયુ જાની, દિલ્હી

[हिन्दी अनुवाद]

प.पू. गुरुजी के ७५वें प्राकट्य पर्व के निमित्त उनके साथ के हमारे प्रसंग-अनुभव या उनके प्रति अपने भाव लिख कर भेजने का अनुरोध 'भगवत् कृपा' में **'प.पू. काकाजी की सौरभ'** स्तंभ के अंतर्गत जब मैंने पहली बार पढ़ा था, तब से मेरी इच्छा थी कि मैं भी कुछ लिखूं। लिखने के लिए जब भी कलम उठाई है, तब-तब विचारों और स्मृतियों में खो जाता हूँ। उन स्मृतियों या अंतर के भावों को शब्द देना मुझे जचँता नहीं और साथ ही साथ उनकी प्रभुता को-साधुता को-शब्दों या भावनाओं की परिधि में समेटना संभव भी नहीं लगता। अब भी लिखने के लिए बैठा तो हूँ, लेकिन हम सब पर निरंतर बरसते उनके प्रेम की और वात्सल्य से भरी उनकी आँखों की स्मृति हुआ करती है। लिखना क्या–कुछ समझ नहीं आता, आँखें गीली हो जाती हैं।

हमारे मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा के समय प.भ. कौशिकभाई (मेरा छोटा भाई) सेवा के लिए आता था। वह ऐसे किस मंदिर में जाता है कि रात-दिन वहीं सेवा में ही लगा रहता है; घर की या जॉब की कोई फ़िकर नहीं–मैं यह देखने के लिए मंदिर आया था। तब प.पू. गुरुजी के दर्शन हुए। साधु-संतों के प्रति मुझे पहले से कोई भाव

नहीं था; हाँ, उनका अभाव भी नहीं था। इसलिए भावपूर्वक उन्हें नमस्कार भी नहीं करता था। लेकिन प.पू. गुरुजी के दर्शन किए तो स्वतः ही-इच्छा के विरुद्ध-दिल झुक गया!

उसके बाद कभी-कभी मंदिर आता। पू. सुहृद्स्वामी द्वारा बनाई गरमा-गरम खिचड़ी खाता। कई दिन ऐसे ही बीत गए। फिर एक बार प.पू. गुरुजी ने कहा, 'भद्रायु, तुम शनिवार-शनिवार मंदिर आना।' उन दिनों लगभग हर शनिवार को वीक एन्ड पर हमारे यहाँ पार्टी होती और उस पार्टी को या उसमें आने वाले मित्रों को छोड़ कर मंदिर आना बहुत कठिन था। पर, प.पू. गुरुजी द्वारा मेरे लिए दिया गया यह पहला ही सूचन था। सो, उन्हें मना भी नहीं कर सकता था। प.पू. गुरुजी ने खूब कृपा की। मन से कहें या बेमन से, पर उन्होंने मुझ से अपनी इच्छा के मुताबिक वर्ता लिया। जो छोड़ना था, वह छुड़वा दिया और जो कराना था, वह करवा लिया।

सत्संग में आने लगा था, उससे पहले और बाद में भी पैसे-टके से, काम-धंधा (व्यापार) अच्छा था। लेकिन थोड़े समय के बाद हालात खूब नाजुक हो गए। प.पू. गुरुजी या प.पू. दीदी से इस बारे में कभी कुछ कहा नहीं, लेकिन उन्हें आभास हो गया था। हमने उन्हें अपना माना हो या नहीं, लेकिन उन्होंने तो हमें अपना माना ही है। इसीलिए वे हमें विषम परिस्थिति में देख नहीं सकते। प.पू. दीदी द्वारा प.पू. गुरुजी ने हमें कहलवाया– *'पैसे इत्यादि की जब जरूरत हो तो कहना। जो कुछ है वह हरिभक्तों का ही है।'* यूँ हमारे कठिन दिनों में उन्होंने हमें खूब बल दिया है। एक मिनिट के लिए भी ऐसा नहीं लगा था कि क्या होगा। वे सतत अहसास करवाते रहे कि वे हमारे साथ खड़े ही हैं।

आज लगभग २० साल होने आए, हमारे मंदिर का निर्माण कार्य अधूरा है और हमें मालूम भी है कि प.पू. गुरुजी यदि धारें तो उनके संकल्प से ऐसे कई मंदिरों का निर्माण हो जाए। लेकिन, उनका उद्देश्य ही कुछ अलग है। मंदिर के निर्माण के साथ-साथ हम हरिभक्तों -परिवारजनों की जरूरतें उनके लिए विशेष हैं और इससे भी अधिक उनका प्रयास या हेतु यह दिखाई देता है कि **इस मंदिर के निर्माण के साथ-साथ हर एक हरिभक्त-परिवारजन के अंतर का मंदिर भी बनता जाए।** खूब-खूब धन्यवाद है ऐसे शिल्पकार को!

एक बार प.पू. गुरुजी लगभग १५०-२०० हरिभक्तों को प.पू. काकाजी के प्रसादी के स्थान के दर्शन करवाने हरिद्वार ले गए थे। वहाँ हम सभी हरिभक्त 'लक्ष्मण झूला' होकर बाज़ार इत्यादि में घूमने गए। उस समय हरिद्वार में अत्यधिक बाबा लोग थे; उनका कोई सम्मेलन हो रहा था। वहाँ बातें भी सुनाई देती थीं कि बाबा छोटे-छोटे बच्चों को उठा कर ले जाते हैं। उसी दौरान मुझे खबर मिली कि हमारा छोटा बेटा वैभव जो कि तब लगभग ८-९ वर्ष का होगा, वह हम सभी से बिछुड़ गया है और मिल नहीं रहा। मैं बहुत ही घबरा गया। साथ में गए सत्संगी भाई और मैं अलग-अलग रास्तों पर वैभव को ढूँढने के लिए निकल पड़े। ढूँढते-ढूँढते एक घंटे से ऊपर हो गया, लेकिन कुछ पता नहीं चला। सभी बहनों, बड़ों और बालकों ने धुन-प्रार्थना करनी शुरू की। बस में बैठे हुए सभी ने लगभग एक घंटे से ऊपर धुन की होगी। मुझे तो धुन-भजन के बारे में कुछ अधिक ख्याल नहीं था। इधर-उधर धक्के खाकर थक गया, तब प्रभु याद आए, आँखें नम हो गईं। इतने में एक पुलिस स्टेशन दिखाई दिया। वहाँ पूछताछ की, तो पता चला कि ऐसा एक लड़का एक जगह पर पुलिस की निगरानी में बिठाया है। हमने जाकर देखा... वह वैभव ही था!

कहने का तात्पर्य यह है कि प.पू. गुरुजी ने प्रसंग योजित करवा के और उसमें से बाहर निकाल कर, भजन का-प्रार्थना का आधार लेकर हर एक मुश्किल का हल पाने एवं हर एक प्रवृत्ति करने की मूलभूत बात जबरन् सिखा दी। साथ ही, **हर एक हरिभक्त का दुःख सभी का साझा है, इसका भी दर्शन ऐसे प्रसंग बना कर करवाया।**

वर्षों पहले सभा में मैंने बात की थी कि कभी-कभी छोटी-छोटी बातों से भी हम डिस्टर्ब हो जाते हैं। जैसे कि –

'किसी फंक्शन में जाने के लिए मैंने कोई विशेष कपड़े पहनने का पक्का किया हो और जब कपड़े बदलने-करने जाऊँ, तो वहाँ देखूँ कि मीसीस ने दूसरे ही कपड़े रखे हैं! ऐसी मामूली - सी बात भी हमें सहज स्वीकार नहीं होती और हम डिस्टर्ब हो जाते हैं।'

सभा के बाद प.पू. गुरुजी ने समझाया कि *'ऐसा कुछ भी बने, तब यदि भद्रायु ऐसा सोचे कि यह सूचन मुझे दीदी ने किया होता तो? और प्रीति ऐसा विचार करे कि ऐसा करने के लिए मुझे गुरुजी ने कहलवाया होता तो? कितनी सरलता और उमंग से वह बात या सूचन स्वीकार हो जाता।'* यूँ हर एक संबंध की कड़ी के रूप में प.पू. गुरुजी या प.पू. दीदी को कैसे देखना और सुहृद्भाव के मूलभूत सिद्धांत से घर-संसार में भी कैसे रहना, इसकी सूझ व्यक्तिगत रूप से भी वे देते रहते हैं।

लगभग तीन साल पहले मेरे बड़े बेटे आशिष का विवाह हुआ। जिस दिन विवाह था, उस रात खूब ठंड थी और शादी का स्थल बहुत दूर – गुड़गाँव में था। सो, कई हरिभक्तों ने प.पू. गुरुजी से प्रार्थना की – *'ठंड खूब है और रात को देर हो जाएगी। सभी संत, हरिभक्त और बहनें वहाँ जा ही रहे हैं, तो आप यह श्रम न लें तो अच्छा।'* लेकिन प.पू. गुरुजी बोले – *'अपने बच्चों के लिए तो मुझे कहीं भी और कभी भी जाना पड़े, तो मैं जाऊँगा।'* भक्तों के प्रति उनकी ऐसी भक्ति – योगी परिवार के प्रति ऐसी आत्मीयता देख कर आँखें नम हो जाती हैं। काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने का एक भी मौका वे हाथ से जाने नहीं देते।

कुछ महीने पहले, गाँधी नगर में मेरी बहन के लड़के की शादी थी। बहन-बहनोई ने कहा कि शादी में पू. दृष्टि दीदी और पू. परछाईं दीदी – जिन्हें प.पू. गुरुजी ने खूब कृपा करके हम दोनों भाइयों को दिव्य लड़कियों के रूप में दिया है – वे भी आ सकें तो अच्छा। मैंने उनसे कहा कि तुम प.पू. गुरुजी से डायरेक्ट ही पूछ कर देख लो। उन्होंने प.पू. गुरुजी को फोन किया तो प.पू. गुरुजी ने तुरंत ही कहा कि *'उन्हें तो घर के प्रसंग में आना ही पड़े न? जरुर आएंगे।'* पू. परछाईं दीदी की तबियत अच्छी न होने के बावजूद, प.पू. गुरुजी ने दोनों बहनों को वहाँ भेजा। जगत की दृष्टि से देखें तो, बहनों को नहीं भेजा होता, तो भी चलता; लेकिन प.पू. गुरुजी को जगत या लोक की परवाह करते हुए कभी नहीं देखा। बस! किस प्रकार भक्त राजी होता है – यही लगन।

प.पू. गुरुजी, आपने हमारे जीवन में किसी बात की कमी रहने नहीं दी है। हमारे स्वभाव-प्रकृति, लापरवाही, आलस या जड़ता – कुछ भी गिने बिना अपना संबंध ही दिया है। उस संबंध के लिए मैं लायक बनूँ। आपको जो नहीं जँचता वह जल्द से जल्द छोड़ दूँ और आपके ७५वें प्राकट्य दिन तक में मैं आपकी मर्जी में रहता हो जाऊँ ऐसे आशिष देना।

– भद्रायु जानी, दिल्ली

✡✡✡

सौरभ - ३१

'प.पू. गुरुजी' और 'हम सब'

सबसे पहले तो , मैं अपने आपको खूब ही सौभाग्यशाली मानती हूँ कि बचपन से ही गुणातीत संत के जोग में रहने का सुअवसर मिला... मेरे पूर्वाश्रम के कुटुंब का पिछले ३४-३५ साल से प.पू. काकाजी एवं प.पू. गुरुजी से संबंध रहा है। सो, बचपन से ही मैं सत्संग के माहौल में पली-बढ़ी। पूर्व का संबंध होगा कि हमारे पूरे परिवार को प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी से अनोखी प्रीति हो गई और भीतर में प्रगट की 'निष्ठा' बैठ गई। प.पू. काकाजी 'भगवान' का स्वरूप हैं – यह बात जीव में शुरू से ही दृढ़ बैठ गई...

आज जब मैं अपने जीवन की ओर देखती हूँ तो स्पष्ट रूप से लगता है कि **प.पू. गुरुजी का मेरे लिए किया गया संकल्प ही मेरे जीवन में कार्य कर रहा है...** मैं ग्यारह साल की थी, तब प.पू. गुरुजी ने सेवक द्वारा पुछवाया था कि इस बेबी से पूछो कि क्या तू भगवान भजेगी ? उस समय भगवान क्या होते हैं और उन्हें भजने का अर्थ क्या है, इसके बारे में कुछ मालूम भी नहीं था। लेकिन, मैंने भगवान भजने के लिए 'हाँ' भर दी थी। फिर घर आकर मैंने बताया कि आज प.पू. गुरुजी ने मुझे ऐसा पुछवाया था, तो मैंने तो भगवान भजने की 'हाँ' भरी है। तब मेरे पूर्वाश्रम के पिता प.भ. नवीनभाई ने कहा कि तू जब पाँच-एक साल की थी, तब एक बार प.पू. गुरुजी हमारे घर आए थे। उन्होंने मुझसे कहा कि अपनी इस बेबी से कहो कि पानी लेकर आए। जब तू उठ कर पानी लेने गई तब उन्होंने मुझसे कहा कि तुम्हारी एक लड़की हमारी है। और... उनके उस संकल्प से मैं उन्नीस वर्ष की आयु में भगवान भजने आई।

यूँ, प.पू. गुरुजी ने यह संकल्प तो किया ही था, लेकिन साथ ही उनकी यह भी इच्छा थी कि मैं नर्स बनूँ। इस बात का मुझे तब पता चला जब १९८५ में मैंने बारहवीं कक्षा पास की और प.पू. गुरुजी से पुछवाया कि मुझे आगे क्या करना है। तब उन्होंने मुझसे कहलवाया कि तुझे तो नर्स बनना है। तब मुझे याद आया कि मैं जब १२-१३ वर्ष की थी, तब **मेरे जन्मदिन पर प.पू. दीदी ने मुझे नर्स का एक पिक्चर दिया था।** लेकिन, तब मैं समझी नहीं थी कि नर्स बनने के लिए मुझे यह पोस्टर दिया है। बस, फिर तो प.पू. गुरुजी के वचन से नर्स के कोर्स के लिए पूछताछ करने पर पता चला कि नर्स बनने के लिए ग्रेज्युएट होना जरूरी है। सो, मैंने मंदिर के नज़दीक ही लक्ष्मीबाई कॉलेज में बी.ए. में एड्मीशन ले लिया। लेकिन, फिर तो कॉलेज में कम और मंदिर में सेवा के लिए ज्यादा आना-जाना होता गया। इसके अतिरिक्त, इस दौरान सप्ताह में दो दिन प.पू. दीदी के साथ सौ. मधुजीजी के घर रुकना भी शुरू किया।

और... १९८६ की ७ मार्च को प.पू. काकाजी ने अचानक स्थूल देह का त्याग किया। यह तो कभी स्वप्न में भी सोचा नहीं था। लेकिन, हक़ीक़त को स्वीकारने के सिवा कोई चारा नहीं था। इस दौरान मेरा मन पढ़ाई से उठ गया। कॉलेज के पहले वर्ष की परीक्षा भी नहीं दी और आगे पढ़ना छोड़ दिया। सो, नर्स बनने की बात भी वहीं की वहीं रह गई। करीब साल-डेढ़ साल तक तो प.पू. गुरुजी और उनसे जुड़ा हुआ दिल्ली का समाज मानो शून्यता में ही डूबा रहा। लेकिन, प.पू. काकाजी को उनके वचनों, सिद्धांतों द्वारा हमारे बीच में जीवंत रखने के लिए, उनके कार्य को जारी रखते हुए, प.पू. गुरुजी दोबारा खड़े हो गए एवं हम सभी को सजग किया।

१९८८ में प.पू. काकाजी की पसंदीदा पात्र **प.पू. आनंदी दीदी** की निश्रा में भगवान भजने के लिए प.पू. सोनाबा, प.पू. बेन, प.पू. ज्योति बहन और प.पू. प्रेम बहन की निश्रा में हमने हरिधाम– सोखड़ा में भागवती दीक्षा ली और… **दिल्ली मंदिर की बहनों के लिए भगवान भजने का रास्ता खुला। जब से भगवान भजने की शुरुआत की, तभी से प.पू. दीदी ने हमें माँ से अधिक प्यार दिया और संभाला।** सहज रूप से कब मैं उनकी हो गई, उसका मुझे ख्याल ही नहीं पड़ा।

फिर, हमारी बहन पू. परछाईं की दोनों किडनी अचानक फेईल हुईं और प.पू. गुरुजी ने मुझे उसकी सेवा में रखा। उन छः महीने उसकी सेवा में रहते हुए मुझे ख्याल आया कि सालों पहले प.पू. गुरुजी ने मुझे नर्स बनने की जो बात की थी, तो **उनके संकल्प ने मुझे नर्स बना ही दिया!** धन्यवाद धन्यवाद गुरुजी! कि आप उत्तरभारत में हम सभी के लिए आए और इस माया नगरी में से उबार कर हमें पसंद करके प्रभु की नगरी में ले आए।

दिल्ली सत्संग समाज का सर्जन करने में प.पू. गुरुजी एक कुशल शिल्पी बने हैं। और, उस शिल्पी के रूप में वे माँ बने, पिता बने, भाई बने, सखा बने, पुत्र बने, साथी बने, शिक्षक बने, शिशु बने, गुरु बने, सेवक बने, दास बने, माली बने, सभी के मालिक भी बने, सारथी बने। जिसे जहाँ जैसी जरूरत पड़ी वैसे बन कर, उस लेवल पर खुद आकर, एक नूतन समाज का सर्जन किया है। फिर भले ही किताब पर खाकी कवर चढ़ाना सिखाना पड़ा, तो वह भी सिखाया या फिर पेपर के ऊपर स्टॅपल पिन कैसे लगानी वह सिखाना पड़ा, तो वह भी सिखाया। ट्रेन की टीकिट के फॉर्म भरने और टीकिट लाने के बाद उसका डुप्लीकेट फॉर्म भर कर टीकिट के साथ पिन लगा कर रखना भी उन्होंने बहुत ही सरलता-स्वाभाविकता से सिखाया।

प.पू. गुरुजी हमेशा कहते हैं कि साधना मार्ग पर चलने के लिए शुरुआत स्वयं ही करनी पड़ती है। हाँ, तुम एक कदम चलोगे, तो प्रभु सौ कदम चलते हैं… सच ही, साधना क्या है, उसका कायदा तक हमें नहीं आता था, लेकिन प.पू. गुरुजी ने स्वयं उस रास्ते पर चल कर बताया है। हर पल हमारे पथप्रदर्शक बने हैं। शुरुआत से ही प.पू. गुरुजी ने मुझे एकाउन्ट्स लिखने की सेवा सौंपी है। सो, खर्च ज्यादा न हो या फ़िज़ूलखर्च न हो, इसका ध्यान रखना मेरा स्वभाव बन गया और कंजूस प्रकृति तो पहले से थी ही। अतः कई बार भक्तों को कुछ देने-करने में मेरी यह प्रकृति आड़े आती रही। भक्तों को कुछ देने-करने में कई बार मन सहज ही छोटा हो जाता। कई बार कुछ देना पड़े तो गिनती हो जाती और मुँह से निकल जाता कि इतना करने की क्या जरूरत है। इससे कम से भी चल सकता है। लेकिन, धीरे-धीरे मेरी सोच में आया कि

प.पू. गुरुजी खुद भक्तों के लिए लुट जाने के लिए बैठे हैं और यह सब कुछ भक्तों का ही तो है; हम साथ में क्या लाए थे? तो फिर 'इन भक्तों के लिए मन छोटा नहीं करना चाहिए'– यह बात तो प.पू. गुरुजी की ही सही है। लेकिन, हम अपने स्वभाव के वश में होकर ऐसा करते हैं, जबकि दूसरी ओर प.पू. गुरुजी तो भगवान में अखंड रह कर सच्चाई से जीते हैं।

उनके ऐसे पारदर्शक जीवन से मैं भी प.पू. गुरुजी की इच्छा के मुताबिक भक्तों के लिए जो भी करना हो, वह करने के लिए कृतनिश्चयी हुई।

शुरुआत से ही **प.पू. गुरुजी ने आत्मीय भक्तों के लिए कभी कोई रिझर्वेशन नहीं रखी।** वस्तु चाहे एक रुपये की हो या लाख रुपये की, उन्होंने अपने जीवन में केवल प.पू. काकाजी को ही प्यारा रखा है। शुरुआत से सभी को कुछ न कुछ देते ही देखा है। भले कितनी ही महंगी चीज क्यों न हो, लेकिन एक पल में ही सहजता से देते हुए देखा है। '**कुटुंबभाव से जुड़े हुए किसी भी भक्त के लिए कोई गिनती नहीं करनी**'– यह उनका मानो सिद्धांत है।

हाल ही की बात है– एक डॉक्टर साहब का जन्मदिन था। उनकी धर्मपत्नी सद्भावना से सत्संग में थोड़े समय से आती हैं, जबकि डॉक्टर तो मंदिर आते भी नहीं थे। लेकिन, प.पू. गुरुजी ने २८५ यूरो की एक बॅग, जो उनके पास थी, उन्हें भेंट में भिजवाई थी। यह देख कर मुझे सहज विचार आया था कि इतनी महंगी– सोलह-सत्रह हज़ार की बॅग डॉ. साहेब के लिए भेजने का क्या अर्थ जबकि वे स्वयं तो मंदिर भी नहीं आते। लेकिन, प.पू. गुरुजी वर्त कर बताते हैं कि भक्तों के जीवन में भगवान प्रगटें– उन्हें सत्संग हो, इसलिए उनकी यह चैतन्यलक्षी क्रिया होती है और... यूँ भक्त के लिए उन्होंने बॅग की कोई क़ीमत नहीं देखी। तो अगले ही दिन पेरीस के एक हरिभक्त ने दिल्ली से घूमने गए एक भक्त के हाथों ५०० यूरो की अनचीती सेवा भेजी। **भक्तों के लिए कोई गिनती न रखें, तो भगवान हमें तुरंत ही दुगना तो भेज ही देते हैं– इसका यह दर्शन करवाया।**

किसी को कैसे राजी कर लेना इसकी तो अनेक कला उन्होंने सिखाई हैं। भक्तों की भगवान की मूर्ति लूटने की कला भी पल-पल सिखाते ही रहते हैं। कई साल पहले की बात है। एक हरिभक्त की लड़की का जन्मदिन था। वह सुबह प.पू. गुरुजी के दर्शन करने के लिए मंदिर आई थी। प.पू. गुरुजी ने मेरे पास से उसे देने के लिए सूट-पीस मंगवाया और मेरे द्वारा प.पू. दीदी की ओर से उसे भेंट दिलवाया। वह लड़की खूब खुश हो गई। उस लड़की के जाने के बाद प.पू. गुरुजी ने सेवक द्वारा मुझे समझाया कि स्वाति को कहो–

अधिकतर भक्त तो मंदिर का कुछ रखते ही नहीं हैं। हमने इसे भेंट दी, वह खुश हो गई और उसने अपने जन्मदिन की जो भेंट दी, उसमें उसने ₹ ११०० रखे हों, तो तुझे इतना ही समझना है कि भेंट ₹ ५०० आई है।

यूँ, इतनी सहजता से उन्होंने मुझे समझा दिया कि भक्तों को कुछ देने-करने में कभी भी मन छोटा नहीं करना। भक्तों को राजी करके उनके अंतर की मूर्ति ले लेनी।

प.पू. गुरुजी की महिमाभरी दूरदर्शिता की भी एक बात करती हूँ। 'गुरुभक्ति यज्ञ' के रूप में १९९७ में १-२ फरवरी को प.पू. गुरुजी का हीरक महोत्सव मनाने के बाद ३ फरवरी को प.पू. पप्पाजी के वरद् हस्तों से 'अक्षरज्योति' के भवन का शिलान्यास करवाया था। तभी प.पू. गुरुजी ने मेईन रोड से 'अक्षरज्योति' की ओर जाती रोड के दोनों तरफ नीम के पौधे लगवा दिए थे, ताकि बहनें जब यहाँ रहने आएं, तब तक में ये सभी पौधे पेड़ बन जाएं और आते-जाते हुए हमारी बहनों को छाया मिले। आज जहाँ अक्षरज्योति का भवन बना है, उसके रास्ते में नीम के बड़े-बड़े वृक्ष पंक्तिबद्ध हो गए हैं। उनसे छाया मिलती है, शीतलता रहती है और इससे भी अधिक, हमारे प्रति प.पू. गुरुजी के अद्भुत लगाव-प्रीति, महात्म्य का सहज ही दर्शन होता है। तो हे गुरुजी! अब हम ऐसा वर्ते कि आपको अंतर में ठंडक हो जाए। आपके अमृतपर्व तक में भक्तों की महिमा सच्चे अर्थ में समझ कर, जो दिव्य सुख आप देना चाहते हो, वह लेते हो जाएँ...

प.पू. गुरुजी ने आश्रित भक्तों को संभालने में कोई कसर नहीं रहने दी। **कैसी भी परिस्थिति हो या विपरीत माहौल में उन्होंने हमें कभी अकेला या भटकते-खुले नहीं छोड़ा; हमेशा साथ ही रहे हैं।** दिल्ली समाज के सर्जन में प.पू. काकाजी के सिद्धांत पर प.पू. गुरुजी ने कुटुंबभाव का उठाव लिया है। आज यह योगी परिवार इतना दिखाई दे रहा है, पर शुरुआत में तो उंगली से गिने जाएँ इतने ही भक्त थे। तब से नींव में ही हम सभी में कुटुंबभावना प्रगटाई है।

मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं जब ८-९ साल की थी, तब प.पू. गुरुजी पूर्वाश्रम के घर में सप्ताह में दो बार तो जरूर आते ही थे। लेकिन, तब घर की आर्थिक हालत ठीक नहीं थी। परिवार का गुज़ारा ही बहुत मुश्किल से होता था। ऐसे में प.पू. गुरुजी भक्तों के साथ आएं, तो सेवा करनी मुश्किल हो जाए। लेकिन, जब भी प.पू. गुरुजी कहलवाते कि आज हम इतने जने तुम्हारे यहाँ आएंगे और चीले खाएंगे या टिक्की खाएंगे, तब उस मॅसेज के साथ उसे बनाने का सामान, तेल वगैरह भी भिजवा देते और ज्यादा ही भेजते। फिर, जब तेल वगैरह बच जाता और उसे लौटाते तो कहते – रखो, घर में काम आएगा और सच में उनकी कृपा से ही कुटुंब का महीने का गुज़ारा करने में तकलीफ नहीं पड़ती थी। ऐसी कुटुंबभावना से उन्होंने हमारे कुटुंब की परवरिश की है। इससे भी अधिक, **उनकी भावना ऐसी कि ज्यादा से ज्यादा भक्तों को लेकर जाएं, ताकि इस घर में उनके भजन करने से इस कुटुंब की निष्ठा पक्की होती जाए।** आज प.पू. गुरुजी के ऐसे परिश्रम और असीम प्रेम के कारण सब हरा-भरा दिखाई पड़ता है।

बचपन से प.पू. काकाजी के प्रवचन सुने, लेकिन वे बातें बहुत समझ नहीं पाती थी। हाँ, उनकी एक बात मुझे याद है कि वे कहते कि **गुणातीत संत को पहचानना बहुत मुश्किल।** सच्चे गुणातीत संत हमेशा छुप कर वर्तते हैं। प.पू. गुरुजी का जीवन देखती हूँ और वर्षो पहले सुनी इस बात के बारे में जब आज सोचती हूँ, तो प.पू. काकाजी की बात एकदम सच्ची लगती है। यहाँ जो-जो कार्य हुए, उनका श्रेय अन्यों को देकर वे स्वयं तो छुपे ही रहे हैं। वर्ना, दिल्ली के समाज को तैयार करने में प.पू. काकाजी के साथ-साथ भक्तिभावपूर्वक प.पू. गुरुजी ने भी अपना लहू बहाया है – यह भी सच है।

उनका जीवन काकामय ही है। वे कई बार कहते भी हैं कि – ***'मैं भले कुछ भी करूँ, लेकिन मेरी वृत्ति का एक छोर तो हमेशा काकाजी के साथ जुड़ा ही होता है।'*** और इसलिए देखते हैं कि उनके संपर्क में आए हर एक के अंतर में प.पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी को बिठा दिया है। जिन हरिभक्तों ने प.पू. काकाजी के दर्शन तक नहीं किए, उनके जीवन में भी प.पू. काकाजी ने एक अनोखा स्थान लिया है; इतना ही नहीं, **प.पू. गुरुजी की अपेक्षा उनके दिल में प.पू. काकाजी का स्थान विशिष्ट है।** यह इसलिए ही संभव हुआ है कि प.पू. गुरुजी ने स्वयं प.पू. काकाजी की ऐसी महिमा हम सभी के अंतर में कूट-कूट कर भर दी है। यूँ **सच्चे गुणातीत संत की रीति-नीति के मुताबिक वे छुपे ही रहे हैं।**

और... इसीलिए ही, प.पू. काकाजी को आगे रख कर, प.पू. गुरुजी को राजी करने के हेतु से यहाँ का समाज तत्पर है। **'प.पू. काकाजी को रख कर' – यानि समग्र गुणातीत समाज में सर्वदेशीयता से जीना।** यह प.पू. गुरुजी की मर्जी है और उनकी इस मर्जी में हम सभी को जुट जाना है।

सच में, प.पू. गुरुजी प.पू. काकाजी का एक अद्‌भुत सर्जन हैं। प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी और प.पू. बा ने **ताड़देव सोनावाला बिल्डिंग से बहाई कुटुंबभावना में उनकी जो घड़ाई हुई है, उसकी सुंगध आज दिल्ली समाज में फैल रही है और प.पू. काकाजी का परिचय दे रही है।**

उनके हर एक कार्य में एक ही हेतु होता है कि इससे मेरे काकाजी राजी होंगे। तभी वे हर एक को सहजता से स्पष्ट कह भी देते हैं कि यह सब मैं तुम्हारे अंदर जो काकाजी हैं, उन्हें राजी करने के लिए कर रहा हूँ। इससे भी अधिक, केवल प.पू. काकाजी का संबंध वाला ही नहीं, बल्कि **समग्र गुणातीत समाज का हरेक मुक्त उनके लिए अपना है।** उन्हें कोई मान-सम्मान दे या न दे, वे तो अलमस्ताई से गुरुभक्ति अदा करने वहाँ चले ही जाते हैं। प.पू. गुरुजी के लिए तो ऐसा ही कह सकेंगे कि **प.पू. काकाजी की मूर्ति सब को बाँट कर, अपने भीतर प.पू. काकाजी की मूर्ति वे सवाई कर लेते हैं – ऐसे 'चाणक्यबुद्धि' संत हैं।** यूँ गुरुजी ख़ुद वर्त कर सभी को यह सिखाते हैं।

प.पू. गुरुजी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे प्रत्येक कार्य भगवान की स्मृति करके ही करते हैं। और तो और, मंदिर की प्रवृत्तियों में भगवान की स्मृति के अलावा, जो उस कार्य में निपुण हो, ऐसे साथी-सेवकों का अभिप्राय भी पूछते हैं। फिर भले ही वह उम्र में उनसे ५० वर्ष छोटा ही क्यों न हो, तो भी उसका अभिप्राय पूछेंगे और उसका मत जान कर, उसकी बात को सहजता से स्वीकारते हैं। उनके वर्तन में किसी भी दिन ऐसा नहीं झलका कि मैं यहाँ का महंत हूँ, मेरी मर्जी के मुताबिक ही सब कुछ होना चाहिए। हाँ, **उन्होंने अपनी मर्जी चलाई है, तो सारे दिल्ली समाज को कुटुंबभाव से जिवाने के लिए** – साधक के जीवन में प्रभु प्रगटाने के लिए। उसमें भी साधक की यदि तैयारी न हो, तो उसे समय देते हैं।

पिछले ३६ वर्ष से मैं प.पू. गुरुजी को देख रही हूँ कि उनके संबंध में आए चैतन्य कैसे अपने स्वभाव का दर्शन करके, उसे बदल कर सुखी हों और प्रगट स्वरूप के साथ अपना संबंध दिव्यभाव से दृढ़ करके, प्रभु के संबंध वाले मुक्तों के साथ सुहृद्‌भाव से जीने की राह पर अग्रसर हों – ऐसी घड़ाई में ही उन्होंने अपना समय बिताया है। लेकिन, हमारी नादानी कहो या लापरवाही के कारण कहो – ऐसी घड़ाई करने वाली इस दिव्य विभूति को अभी भी तत्त्व से पहचान नहीं पाते। फिर भी, प.पू. गुरुजी ने अपने ऐसे वर्तन से आज हम सब को संगी-साथियों के साथ मिलजुल कर सेवा करते कर दिया है।

तो हे गुरुजी! आपके अमृतपर्व पर हम सभी की प्रार्थना है कि हम में तो कई कमियाँ हैं। लेकिन –
'करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान। रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निसान।'
यूँ वर्षों से आप हमारे पीछे परिश्रम कर ही रहे हैं, तो अब **ऐसे आशीर्वाद** आप ही **दें** कि हम सब आपको 'ठंडक' प्रदान करके, आपकी भाँति प.पू. काकाजी की ऐसी पहचान बनें कि **हमारा वर्तन ही बोले कि ये प.पू. काकाजी की लड़कियाँ लगती हैं।**

– साध्वी स्वाति, अक्षरज्योति

(મૂળ ગુજરાતી)

'પ.પૂ. ગુરૂજી' અને 'અમે બધાં'

સહુથી પ્હેલાં તો, હું મારી જાતને ખૂબ જ નસીબદાર માનું છું કે નાનપણથી જ ગુણાતીત સંતના જોગમાં રહેવાનું મળી ગયું... અમારૂં પૂર્વાશ્રમનું કુટુંબ છેલ્લા ૩૫-૩૬ વરસથી પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. ગુરૂજીના જોગમાં છે. એટલે બાળપણથી મને સત્સંગના વાતાવરણમાં ઊછર્યાનો લ્હાવો મળ્યો. પૂર્વનો સંબંધ હશે કે અમારાં આખા કુટુંબને પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. ગુરૂજી પ્રત્યે અનેરી લાગણી અને પ્રગટની નિષ્ઠાની ગેડ બેસી ગઈ. પ.પૂ. કાકાશ્રી 'ભગવાન'નું સ્વરૂપ છે એ વાત જીવમાં શરૂઆતથી દૃઢ મનાઈ ગઈ...

આજે મારા જીવન સામે જોઉં છું તો સ્પષ્ટપણે દેખાય છે કે **મારા માટે પ.પૂ. ગુરૂજીએ કરેલો સંકલ્પ જ મારા જીવનમાં કાર્ય કરી રહ્યો છે...** હું અગિયારેક વરસની હતી, ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીએ સેવક થકી પૂછાવેલું કે આ બેબીને પૂછો કે તું ભગવાન ભજીશ? ત્યારે તો ભગવાન શું હોય અને એને ભજવાના શું એ પણ ખબર ન્હોતી. પણ, મેં કહેવડાવી દીધું કે હા, હું ભગવાન ભજીશ. પછી ઘરે આવીને મેં વાત કરી કે આજે પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને આમ પૂછાવ્યું હતું, તો મેં તો ભગવાન ભજવાની 'હા' પાડી છે. ત્યારે મારા પૂર્વાશ્રમના પિતા પ.ભ. નવીનભાઈએ કહ્યું કે તું જ્યારે પાંચેક વરસની હતી ત્યારે એક વાર પ.પૂ. ગુરૂજી આપણા ઘરે આવેલા. એમણે મને કહ્યું કે તમારી આ બેબીને કહો કે પાણી લાવે; જ્યારે તું ઊઠીને પાણી લેવા ગઈ ત્યારે એમણે મને કહેલું કે તમારી એક દીકરી અમારી છે. અને... એમના એ સંકલ્પે હું ઓગણીસ વરસની ઉમ્મરે ભગવાન ભજવા આવી.

આમ, પ.પૂ. ગુરૂજીએ આ સંકલ્પ તો કર્યો જ હતો, પણ સાથે પ.પૂ. ગુરૂજીની ઇચ્છા કે હું નર્સ બનું. આ વાતની મને ૧૯૮૫માં ખબર પડી જ્યારે મેં બારમી પાસ કરી અને પ.પૂ. ગુરૂજીને પુછાવેલું કે મારે આગળ શું કરવું? ત્યારે એમણે મને કહેવડાવેલું કે તારે તો નર્સ બનવાનું છે. ત્યારે યાદ આવ્યું કે હું જ્યારે ૧૨-૧૩ વરસની હતી, ત્યારે **મારા જન્મદિવસ ઉપર પ.પૂ. દીદીએ મને નર્સનું એક પિક્ચર આપ્યું હતું.** પણ, ત્યારે હું સમજી ન્હોતી કે નર્સ થવા માટે મને આ પોસ્ટર આપ્યું છે. બસ, પછી તો પ.પૂ. ગુરૂજીના વચને નર્સના કોર્સ માટે હું તપાસ કરવા ગઈ, તો ત્યાં ખબર પડી કે નર્સ થવા માટે ગ્રેજ્યુએટ થવું જરૂરી છે. એટલે મેં મંદિરની પાસે જ લક્ષ્મીબાઈ કૉલેજમાં બી.એ.માં ઍડ્મીશન લઈ લીધું. પણ, પછી તો કૉલેજમાં ઓછી અને મંદિરમાં સેવા માટે અવર-જવર વધતી ગઈ. વળી, આ દરમ્યાન અઠવાડિયામાં બે દિવસ પ.પૂ. દીદી સાથે સૌ. મધુજીજીના ઘરે રોકાવાનું પણ શરૂ કર્યું.

ત્યાં તો ૧૯૮૬માં ૭મી માર્ચે પ.પૂ. કાકાશ્રીએ અચાનક સ્થૂળ દેહનો ત્યાગ કર્યો. આ તો કદિ સ્વપ્નમાં ય વિચાર્યું ન્હોતું. પણ, જે હકીકત બની હતી એને માન્યા સિવાય છુટકો નો'તો. અને... આ દરમ્યાન મારૂં મન ભણતરથી ઊઠી ગયું. કૉલેજના પ્હેલાં વરસની પરીક્ષા પણ નહીં આપી ને આગળ ભણવાનું છોડી દીધું. એટલે નર્સ બનવાની વાત પણ ત્યાંની ત્યાં જ રહી ગઈ. લગભગ

વરસ-દોઢ વરસ સુધી તો પ.પૂ. ગુરૂજી અને એમની સાથે જોડાએલો દિલ્હીનો સમાજ એક શૂન્યતામાં જ જાણે ગરકાવ રહ્યો. પણ, પ.પૂ. કાકાશ્રીને તેમના વચનો, સિદ્ધાંતો દ્વારા આપણા સૌ વચ્ચે જીવંત રાખવા માટે તેમના કાર્યને વ્હેતું રાખતા થકાં પ.પૂ. ગુરૂજી ફરી ટટ્ટાર થયા અને અમને સૌને સજાગ કર્યા.

૧૯૮૮માં પ.પૂ. કાકાશ્રીના પસંદગી પાત્ર પ.પૂ. આનંદી દીદીની નિશ્રામાં ભગવાન ભજવા માટે પ.પૂ. સોનાબા, પ.પૂ. બેન, પ.પૂ. જ્યોતિબેન અને પ.પૂ. પ્રેમબેનના સાન્નિધ્યમાં અમોએ હરિધામ-સોખડામાં ભાગવતી દીક્ષા લીધી અને... **દિલ્હી મંદિરના બ્હેનો માટે ભગવાન ભજવાનો રસ્તો ખૂલ્યો. ભગવાન ભજવાની શુરૂઆત કરી ત્યારથી પ.પૂ. દીદીએ અમોને માઁથી વધારે વ્હાલ કર્યું અને સાચવ્યા.** ક્યારે હું સહજ રીતે એમની થઈ ગઈ એની મને ય ખબર ન પડી.

પછી, અમારી બેન પૂ. પરછાઈની બન્ને કીડની અચાનક ફેઈલ થઈ અને પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને એમની સેવામાં રાખી. એ છ મહીના એની સેવામાં રહેતા મને ખ્યાલ આવ્યો કે વરસો પ્હેલાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને નર્સ બનાવવાની જે વાત કરી'તી... એ **એમના સંકલ્પે મને નર્સ બનાવી જ દીધી!** ધન્યવાદ ધન્યવાદ ગુરૂજી! કે આપ ઉત્તરભારતમાં અમ સહુ માટે આવ્યા અને આ માયા નગરીમાંથી ઉગારી અમને પસંદ કરીને પ્રભુની નગરીમાં લાવ્યા.

દિલ્હી સત્સંગ સમાજનું સર્જન કરવામાં પ.પૂ. ગુરૂજી એક કુશળ શિલ્પી બન્યા છે. અરે! શિલ્પીના રૂપમાં એ માઁ બન્યા, પિતા બન્યા, ભાઈ બન્યા, સખા બન્યા, પુત્ર બન્યા, સાથી બન્યા, શિક્ષક બન્યા, શિશુ બન્યા, ગુરૂ બન્યા, સેવક બન્યા, દાસ બન્યા, માળી બન્યા, બધાંના માલિક પણ બન્યા, સારથી બન્યા. જ્યાં જેવી જરૂર પડી એવા બની, એ લેવલ પર પોતે આવીને એક નૂતન સમાજનું સર્જન કર્યું. ભલે ને ચોપડી પર ખાખી કવર ચઢાવવાનું શિખવાડવું પડે, તો એ શીખવ્યું કે પછી પેપર ઉપર સ્ટૅપલ પિન કેવી રીતે લગાડવી એ શિખવાડવું પડયું હોય તો એ શીખવ્યું. ટ્રેનની ટીકીટના ફૉર્મ કેવી રીતે ભરવા, ટીકીટ આવ્યા પછી એનું ડુપ્લીકેટ ફૉર્મ ભરી ટીકીટ સાથે પીન લગાડીને રાખવાનું પણ એમણે ખૂબ જ સરળતાથી–સ્વાભાવિકતાથી શીખવ્યું.

પ.પૂ. ગુરૂજી હંમેશા કહેતા હોય છે કે સાધના માર્ગે ચાલવા માટે શરૂઆત આપણે પોતે કરવી પડે છે. હા, એક ડગલું તમે ભરો, તો પ્રભુ સો પગલાં ભરશે... સાચે જ, સાધના શું છે, એની તો અમને બારખડી ય નો'તી આવડતી, પણ પ.પૂ. ગુરૂજીએ જાતે એ રસ્તે ચાલીને બતાવ્યું છે. હર પળ અમારા પથપ્રદર્શક બન્યા છે. શરૂઆતથી જ પ.પૂ. ગુરૂજીએ મને એકાઉન્ટ્સ લખવાની સેવા સોંપી છે. એટલે ખર્ચો વધારે ન થાય કે નકામો ખર્ચ ન થાય, એનું ધ્યાન રાખવું એ મારો સ્વભાવ બની ગયો હતો અને કંજૂસ પ્રકૃતિ તો પ્હેલાંથી હતી જ. એટલે ઘણી વાર ભકતોને કંઈ આપવા-કરવામાં ય મારી આ પ્રકૃતિ આડે આવતી. ભકતોને કંઈ આપવા-કરવામાં ઘણી વાર મન સહજ જ નાનું થઈ જતુ. કોક વાર કંઈ આપવું પડે, તો ગણત્રી થઈ જતી ને બોલાઈ જવાતું કે આટલું કરવાની શી જરૂરત છે? આટલાથી પણ ચાલી શકે છે. પણ, ધીરે-ધીરે હું વિચારતી થઈ કે–

પ.પૂ. ગુરૂજી પોતે ભક્તો માટે લૂંટાવા બેઠા છે ને આ બધું ભક્તોનું તો છે; અમે સાથે શું લાવ્યા'તા? તો પછી 'એ ભક્તો માટે મન નાનું ન કરવું'– એ વાત તો પ.પૂ. ગુરૂજીની જ બરોબર છે. પણ, અમે અમારા 'સ્વ'-ભાવમાં રહીને આવું કરીએ છીએ, જ્યારે બીજી બાજુ પ.પૂ. ગુરૂજી તો ભગવાનમાં અખંડ રહીને સચ્ચાઈથી જીવે છે.

એમના આવા પારદર્શક જીવનથી મેં પણ પ.પૂ. ગુરૂજીની ઇચ્છા મુજબ ભગવાનના ભક્તો માટે જે કંઈ કરવાનું થાય એ કરવું જ– એવો નિશ્ચય કર્યો.

શરૂઆતથી જ **પ.પૂ. ગુરૂજીએ આત્મીય ભક્તો માટે કોઈ દિવસ કોઈ રિઝર્વેશન નથી રાખ્યું.** વસ્તુ એક રૂપિયાની હોય કે લાખ રૂપિયાની, એમણે પોતાના જીવનમાં કેવળ પ.પૂ. કાકાશ્રીને જ વ્હાલાં રાખ્યાં છે. શરૂઆતથી બધાંને બધું આપતા જ જોયા છે. ગમે તેવી મોંઘી વસ્તુ હોય પણ એક પળમાં એ સહજતાથી આપી દેતા જોયા છે. **'કુટુંબભાવે જોડાયેલા ભક્તો માટે કોઈ પણ ગણતરી નહીં કરવાની'– એ એમનો જાણે સિદ્ધાંત છે.**

હાલની જ વાત છે– એક ડૉક્ટર સાહેબનો જન્મદિવસ હતો. એમના ધર્મપત્ની સદ્ભાવનાથી સત્સંગમાં થોડા સમયથી આવે છે અને ડૉક્ટર તો મંદિરે આવતા ય ન્હોતા. પણ, પ.પૂ. ગુરૂજીએ ૨૮૫ યૂરોની એક બૅગ એમની પાસે હતી, એ એમને ભેટમાં મોકલાવી. આ જોઈ મને સહજ વિચાર આવ્યો કે આટલી મોંઘી– સોળ સત્તરેક હજારની બૅગ ડૉ. સાહેબ માટે મોકલવાનો શો અર્થ કે જે મંદિરે પણ નથી આવતા. પણ, પ.પૂ. ગુરૂજી વર્તીને અમને બતાવે છે કે ભક્તોના જીવનમાં ભગવાન પ્રગટે, એમને સત્સંગ થાય એટલા માટે એમની આ ચૈતન્યલક્ષી ક્રિયા હોય છે. અને... ભગત માટે એમણે બૅગની કોઈ કિંમત ન જોઈ, તો બીજે જ દિવસે પેરીસના એક હરિભક્તે અહીં દિલ્હીથી ફરવા ગયેલા ભક્ત સાથે ૫૦૦ યૂરોની અણધારી સેવા મોકલી. **ભક્તો માટે કોઈ ગણતરી ન રાખીએ, તો ભગવાન આપણને તરત જ બમણું તો મોકલી જ આપતા હોય છે એ ય દર્શન કરાવ્યું.**

કોઈને રાજી કેવી રીતે કરવા એની તો અનેકો કળા એમણે શીખવી છે. ભક્તોની ભગવાનની મૂર્તિ લૂંટવાની કળા પણ પળેપળ શીખવતા જ હોય છે. બહુ વર્ષો પ્હેલાંની વાત છે. એક હરિભક્તની દીકરીની વર્ષગાંઠ હતી. સવારે તે પ.પૂ. ગુરૂજીના દર્શન કરવા મંદિરે આવી હતી. પ.પૂ. ગુરૂજીએ મારી પાસે એને માટે સૂટ-પીસ મંગાવ્યો અને પ.પૂ. દીદી તરફથી મારી પાસે એને ભેટ અપાવ્યો. એ દીકરી ખૂબ રાજી થઈ ગઈ. એ દીકરીના ગયા પછી પ.પૂ. ગુરૂજીએ સેવક દ્વારા મને સમજાવ્યું કે સ્વાતિને કહો–

અધિકતર ભક્તો તો મંદિરનું ક્યારે ય કંઈ રાખતા ન હોય. આપણે આને ભેટ આપી, એ રાજી થઈ અને એણે જે પોતાના જન્મદિવસની ભેટ મૂકી હશે; એમાં એણે ₹૧૧૦૦ મૂક્યા હોય, તો તારે એટલું જ સમજવાનું કે ભેટ ₹૫૦૦ આવી છે.

આમ, આટલી સહજતાથી એમણે મને સમજાવી દીધું કે ભક્તોને કંઈ આપવા-કરવામાં કોઈ દિવસ મન ટૂંકૂ કરવું નહીં. ભક્તોને રાજી કરી એમના અંતરની મૂર્તિ લઈ લેવી.

પ.પૂ. ગુરૂજીની મહિમાભરી દૂરદર્શિતાની ય એક વાત કરૂં. 'ગુરૂભક્તિ યજ્ઞ'રૂપે ૧૯૯૭માં ૧-૨ ફેબ્રુઆરીએ પ.પૂ. ગુરૂજીનો હીરક મહોત્સવ ઊજવ્યા પછી ૩જી ફેબ્રુઆરીએ 'અક્ષરજ્યોતિ'ના ભવન માટે પ.પૂ. પપ્પાજીના હસ્તે ખાતમુહૂર્ત હતું. ત્યારે જ પ.પૂ. ગુરૂજીએ 'કાકાજી લેઈન'થી 'અક્ષરજ્યોતિ' તરફ જતી રોડની બન્ને બાજુ લીમડાના છોડ રોપાવી દીધાં કે જેથી બ્હેનો અહીં રહેવા આવે, ત્યાં સુધીમાં આ બધાં રોપાં ઝાડ બની ગયા હોય અને આવતી-જતી આપણી બ્હેનોને છાંયડો મળે. આજે જ્યાં અક્ષરજ્યોતિનું ભવન બન્યું છે, એના રસ્તામાં સાચે જ લાઇનબંધ લીમડાના મોટા-મોટા ઝાડ થઈ ગયા છે. એનાથી છાંયડો મળે છે, શીતળતા રહે છે અને એથીય વધારે પ.પૂ. ગુરૂજીની અમારા પ્રત્યેની અનેરી લાગણી-પ્રીતિનું, મહાત્મ્યનું સહજ જ દર્શન થાય છે. તો હે ગુરૂજી! હવે આપના સિદ્ધાંતો ને આપની રૂચિનું અમારા અંતરમાં વટવૃક્ષ બને અને પાંગરે ને અમે એવું વર્તીએ કે આપને અંતરમાં ઠંડક થઈ જાય. આપના અમૃતપર્વ સુધીમાં ભક્તોનો મહિમા સાચા અર્થમાં સમજીને જે દિવ્ય સુખ આપવા આપ ઇચ્છો છો તે લેતા થઈ જઈએ...

પ.પૂ. ગુરૂજીએ આશ્રિત ભક્તોની સંભાળ રાખવામાં કોઈ કસર રહેવા નથી દીધી. **ગમે તેવી પરિસ્થિતિમાં કે વિપરીત દેશકાળમાં એમણે અમોને કદિ એકલા કે રેઢા મૂકયા નથી; હંમેશા સાથે જ રહ્યા છે.** દિલ્હી સમાજના સર્જનમાં પ.પૂ. કાકાશ્રીના સિદ્ધાંતે પ.પૂ. ગુરૂજીએ કુટુંબભાવનો ઉઠાવ લીધો છે. આજે આ યોગી પરિવાર આટલો દેખાય છે, પણ શરૂઆતમાં તો આંગળીએ ગણાય એટલા જ ભક્તો હતાં. ત્યારથી પાયામાં જ અમ સહુમાં કુટુંબભાવના પ્રગટાવી છે.

મને બરોબર યાદ છે કે હું ત્યારે ૮-૯ વરસની હતી, જ્યારે પ.પૂ. ગુરૂજી અમારાં પૂર્વાશ્રમના ઘરે અઠવાડિયે બે વાર તો જરૂર આવતા જ. પણ, ત્યારે ઘરની આર્થિક સ્થિતિ બહુ સારી ન્હોતી. કુટુંબનો ગુજારો જ બહુ મુશ્કેલીથી થતો. એમાં જો પ.પૂ. ગુરૂજી ભક્તો સાથે આવે, તો સેવા કરવી કઠણ પડી જાય. પણ, જ્યારે ય પ.પૂ. ગુરૂજી કહેવડાવે કે આજે અમે આટલા જણા તમારે ત્યાં આવીશું અને પૂડલા જમીશું કે ટિક્કી ખાઈશું, ત્યારે એ મૅસેજની સાથે સીધું–સામાન, તેલ પણ મોકલાવી આપતા અને વધારે જ મોકલતા. પછી, જ્યારે તેલ વિગેરે વધે અને પાછું મોકલાવીએ તો કહે–રાખો ઘરમાં કામ આવશે અને ખરેખર એમની કૃપાથી જ કુટુંબને મહીનાનો ખર્ચો પૂરો કરવામાં તકલીફ પડતી નહીં. આવી કુટુંબભાવનાથી અમારા કુટુંબની પરવરિશ કરી. એથી વધારે **એમની ભાવના એવી કે વધારે ને વધારે ભક્તોને લઈને જઈએ, તો એ ભક્તો આ ઘરે જે ભજન કરે એના ફળસ્વરૂપે આ કુટુંબની નિષ્ઠા પાકી થતી જાય.** આજે પ.પૂ. ગુરૂજીના આવા દાખડા અને અસીમ પ્રેમને લીધે બધું લીલુંછમ દેખાય છે.

નાનપણથી પ.પૂ. કાકાશ્રીના પ્રવચનો સાંભળેલા, પણ એમાં બહુ કાંઈ સમજ પડતી નહીં. હા, એમની એક વાત મને યાદ છે કે એઓ કહેતાં કે **ગુણાતીત સંતને ઓળખવા બહુ મુશ્કેલ.** સાચા ગુણાતીત સંત હંમેશા છૂપા વરતે. પ.પૂ. ગુરૂજીનું જીવન જોઉં છું ને વર્ષો પહેલાં સાંભળેલી આ વાતને જ્યારે આજે વિચારૂં છું, તો પ.પૂ. કાકાશ્રીની વાત તદ્દન સાચી લાગે છે. અહીં જે જે કાર્યો થયા, એનો શ્રેય બીજાંને આપીને પોતે તો અળગા જ રહે છે. બાકી, દિલ્હીના સમાજને તૈયાર કરવા

પ.પૂ. કાકાશ્રીની સાથે-સાથે ભક્તિભાવપૂર્વક પ.પૂ. ગુરૂજીએ પોતાનું લોહી રેડ્યુ છે– એ ય સાચું છે.

એમનું જીવન કાકામય જ છે. એઓ ઘણી વાર કહેતા પણ હોય છે– ***'હું ભલે ગમે તે કરૂં, પણ મારી વૃત્તિનો એક છેડો તો હંમેશા કાકાશ્રી સાથે જોડાએલો હોય જ છે'.*** અને તેથી જોઈએ છીએ કે એમના જોગમાં આવનાર દરેકના અંતરમાં પ.પૂ. ગુરૂજીએ પ.પૂ. કાકાશ્રીને બેસાડી દીધાં છે. જે હરિભક્તોએ પ.પૂ. કાકાશ્રીના દર્શને ય નથી કર્યા, એમના જીવનમાં પણ પ.પૂ. કાકાશ્રીએ એક અનેરૂં સ્થાન લીધું છે એટલું જ નહીં– **પ.પૂ. ગુરૂજી કરતાં ય એઓના હૈયે પ.પૂ. કાકાશ્રીનું સ્થાન વિશિષ્ટ છે.** આ એટલે જ શક્ય બન્યુ કે પ.પૂ. ગુરૂજીએ પોતે જ પ.પૂ. કાકાશ્રીનો એવો મહિમા અમ સહુના અંતરમાં કૂટી-કૂટીને રેડ્યો છે. આમ **સાચા ગુણાતીત સંતની રીતિ-નીતિથી એ પોતે છૂપા જ રહ્યા છે.**

અને એટલે જ, પ.પૂ. કાકાશ્રીને આગળ રાખી પ.પૂ. ગુરૂજીને રાજી કરવાના હેતુથી અહીંનો સમાજ મંડયો છે. **'પ.પૂ. કાકાશ્રીને રાખી'– એટલે સમગ્ર ગુણાતીત સમાજમાં સર્વદેશીયતાથી જીવવું.** આ પ.પૂ. ગુરૂજીની મરજી છે અને એમની આ મરજીમાં અમારે સહુએ ભળવું છે.

ખરેખર, પ.પૂ. ગુરૂજી પ.પૂ. કાકાજીનું એક અદ્‌ભુત સર્જન છે. પ.પૂ. કાકાજી, પ.પૂ. પપ્પાજી અને પ.પૂ. બાએ **તારદેવના સોનાવાલા બીલ્ડીંગમાંથી વહેવડાવેલા કુટુંબભાવનાના પૂરમાં એમનું જે ઘડતર થયું, એની સુગંધ આજે દિલ્હી સમાજમાં પ્રસરી રહી છે અને પ.પૂ. કાકાશ્રીનો પરિચય આપી રહી છે.**

એમના દરેક કાર્યમાં એક જ હેતુ હોય છે કે મારા કાકાજી રાજી થશે. ત્યારે જ દરેકને સહજતાથી સ્પષ્ટ કહી દે છે કે આ બધું હું તમારી અંદર જે કાકાજી છે, એમને રાજી કરવા કરૂં છું. એથી વિશેષ કેવળ પ.પૂ. કાકાશ્રીના સંબંધવાળા જ નહીં, પણ **સમગ્ર ગુણાતીત સમાજનો કોઈ પણ મુક્ત એમને મન પોતાનો છે.** ભલે કોઈ એમને માન-સમ્માન આપે કે ન આપે, એ તો અલમસ્તાઈથી ગુરૂભક્તિ અદા કરવા પ્હોંચી જ જાય છે. પ.પૂ. ગુરૂજી માટે તો એમ જ કહી શકીએ કે **પ.પૂ. કાકાશ્રીની મૂર્તિ સૌને વ્હેંચી, એમની સવાઈ મૂર્તિ પોતાની કરી લે એવા એ 'ચાણક્યમતિ' સંત છે.** આમ ગુરૂજી પોતે વર્તીને બધાંને આ શીખવે છે.

એમની બહુ મોટી વિશેષતા એ છે કે કોઈ પણ કાર્ય એઓ ભગવાનની સ્મૃતિ કરીને જ કરે છે. વળી, મંદિરની પ્રવૃત્તિઓમાં તો ભગવાનની સ્મૃતિ ઉપરાંત, બીજાં સાથી-સેવકોનો અભિપ્રાય પણ પૂછે છે, જે એ કાર્યમાં પારંગત હોય. પછી ભલે ને એ ઉંમરમાં એમનાથી ૫૦ વર્ષ નાની હોય, તો પણ એનો અભિપ્રાય પૂછશે અને એનો મત જાણી, એની વાતને સહજતાથી સ્વીકારી લે છે. એમના વર્તનમાં કોઈ દિવસ પણ એવું ઝળકાયું નથી કે હું અહીં મહંત છું, મારી મરજી મુજબ જ થવું જોઈએ. હા, **એમણે પોતાની મરજી ચલાવી છે, તો આખા દિલ્હી સમાજને કુટુંબભાવથી જીવાડવા માટે**– સાધકના જીવનમાં પ્રભુ પ્રગટાવવા માટે. એમાં પણ સાધકની તૈયારી ન હોય તો પછી એને સમય આપે છે.

છેલ્લા ૩૬ વરસથી હું પ.પૂ. ગુરૂજીને જોઉં છું કે એમના સંબંધમાં આવેલા ચૈતન્યો કેમ કરીને પોતાના સ્વભાવનું દર્શન કરી, એને બદલીને સુખી થાય ને પ્રગટ સ્વરૂપ સાથે પોતાનો સંબંધ દિવ્યભાવે દૃઢ કરી, પ્રભુના સંબંધવાળા મુક્તો સાથે સુહૃદ્‌ભાવે જીવવાની રાહ પર અગ્રસર થાય– એના ઘડતરમાં જ એમનો સમય વીત્યો છે. પણ, અમારી નાદાની કહો કે બેપરવાહીને લીધે કહો– આવું ઘડતર કરનારી આ દિવ્ય વિભૂતિને હજુ તત્ત્વે કરીને ઓળખી નથી શકતા. છતાં, પ.પૂ. ગુરૂજીના આવા વર્તને કરી આજે અમ સહુને સંગી-સાથીઓ સાથે હળીમળી સેવા કરતા કરી દીધાં છે.

તો હે ગુરૂજી! આપના અમૃતપર્વે અમ સહુની પ્રાર્થના છે કે અમારાંમાં તો ઘણી ખોટ્યો છે. પણ, ***'કરત-કરત અભ્યાસ કે, જડમતિ હોત સુજાન। રસરી આવત જાત તે, સિલ પર પરત નિસાન।'*** એમ વર્ષોથી આપ અમારી પાછળ પરિશ્રમ કરી જ રહ્યા છો, તે હવે **એવા આશીર્વાદ** આપ જ **આપજો કે** અમે સહુ આપને 'ઠંડક' કરી દઈ, આપની જેમ પ.પૂ. કાકાજીની એવી ઓળખાણ બનીએ કે **અમારૂં વર્તન જ બોલે કે આ પ.પૂ. કાકાજીની દીકરીઓ લાગે છે.**

– સાધ્વી સ્વાતિ, અક્ષરજ્યોતિ

✡✡✡

सौरभ - ३२

स्वामिश्रीजी

* बात तब की है, जब प.पू. गुरुजी पहली बार हमारे घर आने वाले थे। प.पू. काकाजी के तो हमने कभी दर्शन नहीं किए थे। पर अक्षरवासी मनोहरलालजी, जिन्हें प्यार से सब 'चाचा चूरण' कहते थे, उनसे प.पू. काकाजी के इतने प्रसंग सुने थे कि अंतर से उनके साथ प्रीति हो गई थी। प.पू. गुरुजी के आने से एक रात पहले सपने में प.पू. काकाजी के दर्शन हुए। हमारे घर अधिकतर सभी लोग गली की दांई तरफ से आते हैं, पर प.पू. काकाजी टाटा एस्टेट गाड़ी में बांई तरफ से आए। बरामदे में आकर इधर-उधर नज़र मारी और फिर सीढी चढ़कर ऊपर आए तो दरवाजे पर देखकर बोले – *अच्छा! जय स्वामिनारायण लिखा हुआ है!* लिविंग रूम में बैठ गए और बोले - *कॉफी नहीं पिलाओगी क्या?*

  अगली सुबह जब प.पू. गुरुजी आए, तो वे भी बांई तरफ से आए। टाटा एस्टेट गाड़ी से उतर कर बरामदे में रूककर इधर-उधर नजर मारी और फिर सीढी चढ़कर ऊपर आए। दरवाजे पर देखते ही बोले – *अच्छा! जय स्वामिनारायण लिखा हुआ है!* अंदर जाकर पापा से कहलवाया कि *टिन्कू से पूछो, कॉफी नहीं पिलाएगी क्या?* बालक बुद्धि थी...हैरानी हुई कि वाह! यह तो सब सेम-सेम हो गया! पर जो मर्म है, वो आज समझ में आ रहा है कि **काकाजी ही गुरुजी हैं, गुरुजी ही काकाजी हैं।**

* एक बार **प.पू. गुरुजी** ने जगरांव में पधरामनी के दौरान अचानक ही कहलवाया कि *आज मैं तुम्हारे घर आऊंगा।* मैं और गंगा (मेरी छोटी बहन) भाग कर घर गए और अच्छी तरह सफाई की व अपना रूम सॅट करने लगे। मम्मी ने कहा कि *गुरुजी तो लिविंग रूम में ही बैठेंगे, तुम लोग क्या कर रहे हो?* हम दोनों के मन में था– *काश, गुरुजी हमारे रूम में आएँ!* प.पू. गुरुजी आए और लिविंग रूम में बैठे। जब जाने लगे तो बोले– *'चलो! बच्चों के रूम में भी दो मिनिट धुन करते हैं।'* हमारे मन की बात जान कर,

यूँ हमें **अच्छी-अच्छी स्मृतियाँ देकर भक्ति मार्ग पर चलने के लिए हर क्षण सहज प्रेरणा देते हैं।**

* बी.एस.सी में मेरा फाईनल प्रेक्टिकल था। प.पू. गुरुजी ने पुछवाया– *किस सब्जेक्ट का प्रेक्टिकल है?* मैंने कहलवाया – *ज़ुओलॉजी का है।* प.पू. गुरुजी ने चुटकी बजाते हुए कहलवाया – *जब मैं कॉलेज में था, तो कॉकरोच का ब्रेईन फटाक से निकाल लेता था। जसु (टिंकू) को निकालना आता है?* तब मेरी बुद्धि में बात घुसी ही नहीं। पर, जब एग्ज़ाम देने गई, तो कॉकरोच का ब्रेईन ही निकालना आया! मुझे तो ब्रेईन निकालना आता नहीं था। मेरी तो आंखें भर आईं और अंदर से प्रार्थना करने लगी कि *हे गुरुजी! आप तो फट से ब्रेईन निकाल लेते थे, पर यह मेरे बस की बात नहीं। प्लीज़ हैल्प मी...।* एग्ज़ामिनर जब देखने आया तो इन्टरनल एग्ज़ामिनर बोला– *मैडम, मैंने चैक कर लिया है, आप दूसरी लेन में देखो।* प.पू. गुरुजी ने मेरी पुकार सुन कर इन्टरनल एग्ज़ामिनर को निमित्त बनाकर मुझे एहसास करवाया कि ही ईज़ ऑल्वेज़ धॅर फॉर मी।

* कोई बड़ा प्रसंग बने और गुरु हल कर दें, वो बात और है। पर, हमारे यहाँ तो छोटे प्रसंग में भी प.पू. गुरुजी सदैव हमारे साथ रहते हैं! एक बार मुझे दिल्ली से ७:२० की शताब्दी से पंजाब वापिस जाना था। सुबह प.पू. गुरुजी के दर्शन करके जब रेलवे स्टेशन पहुँची, तो वहाँ भीड़ देखकर ड्राईवर को वापिस भेज दिया कि मैं ख़ुद ही चली जाऊंगी। शाम की गाड़ी हमेशा प्लेटफार्म १ से जाती थी, इसलिए मैं प्लेटफार्म १ पर खड़ी हो गई। ७:०५ पर प.पू. गुरुजी ने सेवक से फोन करवाकर पुछवाया कि मैं कहाँ हूँ। जवाब देने के बाद जब मैंने फोन बंद किया, तो दिमाग़ में आया कि अभी तो मैं मंदिर से आई थी, तो फिर फोन क्यों आया? दिमाग की घंटी बजी... टिकिट चॅक करी, एक कुली से पूछा– *अभी तक गाड़ी क्यों नहीं आई?* उसने बताया– *गाड़ी तो प्लेटफार्म नम्बर १२ पर खड़ी है, आप भाग कर जाओ।* दौड़ कर गाड़ी में बैठी ही थी कि दोबारा फोन पर प.पू. गुरुजी ने पुछवाया– *जसु कहाँ है?* मैंने प.पू. गुरुजी को थँक्स कहलवाया। **प.पू. गुरुजी पल पल अपने भक्तों की खबर लेते हुए छोटे-बड़े आदि की गिनती ही नहीं रखते।**

* कॉलेज से छुट्टी न मिलने के कारण कई बार मुझे शाम की गाड़ी से ही दिल्ली जाना पड़ता है। अकेले होते हुए भी प.पू. गुरुजी ने कभी यह एहसास नहीं होने दिया। गाड़ी चलने के टाईम पर अभिषेक से फोन करवाएंगे। फिर पाँच-छः घंटे तक हर आधे घंटे में अपडेट्स लेने के लिए पू. गार्गी, पू. गंगा या पू. कौशिक अंकल का फोन आता ही रहता है। ट्रेन में आस-पास जो लोग बैठे होते हैं, उन्हें भी ऐसा लगता कि कितनी कॅयरिंग फॅमिली है, जो पल-पल खबर रखती है। **थँक्स टु गुरुजी फॉर ए डिवाईन फॅमिली...** आई एम रियली ए प्रिविलेज्ड वन।

* कई बार **स्वरूपों के मुख से सुना है कि गुरुजी तो छुपे हुए साधु हैं। जब इस बात पर चिंतन किया, तो बात समझ में आई।** उसी के कुछ अनुभव शॅयर करना चाहती हूँ।

  बी.एस.सी के बाद बी.एड एन्ट्रन्स की तैयारी कर रही थी। उस समय प.पू. गुरुजी जगरांव आए हुए थे। प.पू. गुरुजी ने कहलवाया कि जब अगली बार मैं आऊँगा, तो टिन्कू मास्टरानी होगी। मेरा एन्ट्रन्स

क्लीयर होने से पहले ही प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद दे दिए और वो फले-फूले...

* एक बार हम प.पू. गुरुजी के साथ पधरामनी पर जा रहे थे। जहाँ जाना था, वो घर पास में ही था। सो बहनें पैदल जा रही थीं। प.पू. गुरुजी ने अपनी गाड़ी रूकवाकर सेवक से कहलवाया कि *क्या जसु को ड्राईव करना आता है।* मैंने कहलवाया नहीं। प.पू. गुरुजी ने कहलवाया कि *अगर जसु को गाड़ी चलानी आती, तो मैं उसकी गाड़ी में बैठकर जाता।* यह बात थोड़ी अटपटी जरूर लगेगी कि एक साधु ऐसा कैसे कह गए। लेकिन मुझे उसके भीतर छुपा रहस्य तब समझ में आया, जब एक महीने के अंदर ही हमने गाड़ी ले ली। उसका नाम प.पू. गुरुजी ने 'मेहर' रखा। छुपा आशीर्वाद 'मेहर' के रूप में सामने आया!
* जो टीचिंग लाईन में होगा, उसे खूब ख्याल होगा कि परमनन्ट लॅक्चरारशीप के लिए यू.जी.सी. नेशनल ऐलीजिबीलिटी टॅस्ट अनिवार्य है। कई बार टॅस्ट देने पर भी क्लीयर न होने के कारण मैं डिप्रैस्ड रहने लगी थी। मैंने गुरुजी को प्रार्थना लिखकर भेजी। २६ दिसंबर, २००६ को पेपर होना था। हफ्ताभर पहले प.पू. गुरुजी ने सेवक से फोन करवाया कि तैयारी करना। मेरा मन तो पढ़ाई में लगा ही नहीं था। पर प.पू. गुरुजी ने कहलवाया था, इसलिए यूँ ही किताब खोलकर जो पन्ना आता उसे पढ़कर बस काम खत्म! पेपर वाले दिन दिल्ली मंदिर फोन किया, तो प.पू. गुरुजी ने सामने से कहलवाया कि ***आज काकाजी जसु की पॅन पर बैठने वाले हैं। उन्हें याद करके पेपर लिखना है बस!*** पेपर के बाद रिज़ल्ट तक हर १५ दिन बाद प.पू. गुरुजी पुछवाते कि *रिज़ल्ट कब आएगा।* मुझे १००% यकीन हो गया था कि आई विल कम आऊट विथ फ्लाईंग कलर्स और मेरा टॅस्ट क्लीयर हो गया। सच! कितनी बार भजन सुनती थी – 'करते हो आप काका, मेरा नाम हो रहा है...', पर सोचती थी कि यह भजन मुझ पर कब लागू होगा और... उस दिन मैं स्वयं ही गा रही थी।
* यू.जी.सी क्लीयर होने के बावजूद चार साल तक पी.एच.डी रिसर्च करने में मेरी कोई रूचि नहीं थी। लेकिन २०१० में मन में पी.एच.डी करने का विचार आया और फॉर्म भर दिया। १०-१५ दिन के बाद डिपार्टमॅन्ट से लेटर आया कि रूल्स चेन्ज होने के कारण अब पहले एन्ट्रन्स क्लीयर करना होगा। डाईरॅक्ट एन्रोलमॅन्ट नहीं हो सकती। पढ़ाई छोड़े काफी साल हो गए थे, इसलिए थोड़ा मुश्किल लग रहा था। एन्ट्रन्स टॅस्ट के लिए फॉर्म भर दिया। कई साल पहले प.पू. गुरुजी ने बहनों से आशीर्वाद रूप लिखवा कर मुझे भिजवाया था कि तेरी फेवर में जो होगा, वहाँ (प्रभु) ग्रीन सीग्नल देते ही जाएंगे। इसी बात का बल लेकर फॉर्म भेजा था। २०१० जुलाई में गुरुपूर्णिमा के लिए दिल्ली गई थी। वहाँ से जब वापिस आई, तो पहली खबर यही मिली एन.ई.टी क्वालीफाईड स्टुडन्टस को एन्ट्रन्स टॅस्ट देने की जरूरत नहीं है। बस फिर क्या? आज मैं पी.एच.डी. में एनरोल्ड हूँ। कैसे छुपे-समर्थ साधु! मेरे भीतर की उथल-पुथल जानकर मेरे लिए तो फूलों की राह ही तैयार कर दी मेरे गुरुजी ने...

हे गुरुजी! आप तो मेरे लिए फूलों की राह तैयार करते ही रहे हो, पर मैं अपने मन, वचन, वर्तन से गुणातीत ख़ानदानी निभाते हुए इस रास्ते पर अग्रसर होऊं, यही भीतर से प्रार्थना!

– कु. जसु, जगरांव-पंजाब

✡✡✡

जीवन धन्य करने का मौका मिला स्वर्णिम...

भगवान स्वामिनारायण ने अपने ब्रह्मस्वरूप संतों द्वारा पृथ्वी पर अखंड रहने का अभय वरदान देकर, अपने आश्रितों को तो निहाल कर ही दिया; इससे भी अधिक अत्यधिक हर्ष की बात यह है कि जीव को बल देते रहने के लिए ये गुणातीत विभूतियाँ निरंतर प्रयत्नशील हैं। दिन-रात वे यही उद्यम करते रहते हैं कि उनके संबंध वाले जल्द से जल्द प्रभु में निरंतर रहते हो जाएँ। इस हेतु ही वे मानो सभी भक्तिरूप प्रवृत्तियाँ आयोजित करते रहते हैं।

पिछले साल **७ मार्च** को **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** के **स्वधामगमन दिन** निमित्त और **प.पू. गुरुजी** व **प.पू. दीदी** के अच्छे स्वास्थ्य के हेतु से ४८ घंटे की अखंड परिक्रमा का आयोजन किया गया था। तभी यह तै किया गया था कि अगले वर्ष **७२ घंटे की अखंड परिक्रमा** करेंगे। बाद में ध्यान भी आया कि २०११ में तो **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के स्मृति पर्व को २५ वर्ष** पूर्ण होंगे। अतः स्मृति पर्व की रजत जयंती में सम्मिलित होने के लिए मुंबई, गुजरात, पंजाब से काफी बड़ी संख्या में भक्त परिक्रमा के लिए ४ मार्च की दोपहर तक दिल्ली मंदिर आ पहुँचे थे।

४ मार्च की सायं ७:०० बजे प.पू. काकाजी की पुष्पसमाधि पर सभी एकत्रित हुए। प.पू. गुरुजी की निश्रा में पू. यज्ञप्रियस्वामी ने मंत्रपुष्पांजलि के श्लोक का उच्चारण किया। **प.पू. गुरुजी** ने अखंड परिक्रमा का प्रांरभ **पू. मल्कानी अंकल** एवं **पू. अनिल मासा** द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करवा कर किया। समाधि स्थल का माहौल दिव्यता से भरा-भरा था। पू. अक्षरस्वरूपस्वामी, प.भ. आशिष, प.भ. पुनीत एवं साथियों ने समाधि स्थल को बहुत सुंदर ढंग से सुसज्जित किया था। पिछले दो वर्ष से हम देख रहे हैं कि प.पू. गुरुजी अखंड परिक्रमा के समय अपना अधिकतर समय समाधि स्थल पर ही बिताते हैं; सो, समाधि के पास एक छोटा-सा स्टेज बनाया गया था, जहाँ पर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित अन्य गुणातीत स्वरूपों की मूर्तियाँ स्थापित करके मानो एक छोटा-सा मंदिर ही बना दिया था। उसी के नीचे प.पू. गुरुजी एवं कुछ गणमान्य मुक्तों के लिए सोफा लगा कर बैठने की व्यवस्था की गई थी। लगातार धुन-भजन के माहौल में सभी भावविभोर होकर स्वामिनारायण महामंत्र का निरंतर जाप करते हुए परिक्रमा कर रहे थे। समाधि के आस-पास के हिस्से में हरिभक्तों के बैठने के लिए कुर्सियाँ भी लगाई गई थीं। साथ ही पू. सुहृद्स्वामी की निगरानी में प.भ. विनोदभाई, प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. विजयभाई महेता, प.पू. दिलीपभाई शाह, प.भ. अजय चावलाजी आदि मुक्तों ने समय-समय पर चाय-नाश्ता एवं भोजन की सुचारु रूप से जो व्यवस्था की, वह उनके भक्ति से परिपूर्ण दिल का दर्शन कराती थी। इस प्रकार ये मुक्त लगातार तीन दिन तक भक्तों के दिल की मूर्ति लूटते रहे...

५ मार्च को **फागुन शुक्ला-१** के मुताबिक **प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि** थी, सो सायं पुष्पसमाधि पर ही प.पू. गुरुजी का प्राकट्योत्सव मनाया गया। साथ ही कुछ मुक्त परिक्रमा भी करते रहे और सभा का लाभ भी लेते रहे। कुछ वक्ताओं ने अपने अनुभवों को सभी के साथ बाँटा और... प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद देते हुए परिक्रमा की महिमा विस्तृत रूप से समझाई।

रात-दिन अखंड परिक्रमा जारी रही। स्थानीय कर्मयोगी मुक्त अपने-अपने समय पर आकर परिक्रमा करते रहे। बाहर के कुछ मुक्त तो एक दिन के लिए भी आकर वापिस चले गए। इन सभी को देख कर यह स्पष्ट था कि आंतरिक श्रद्धा और लगाव के बिना यह संभव ही नहीं। और तो और, **प.पू. दिनकरभाई** के सुपुत्र **पू. रुपितभाई** भी परिक्रमा के लिए खास अमेरिका से आकर घंटों तक लगातार परिक्रमा करते रहे। स्वयंसेवकों ने उनसे थोड़ी देर आराम करने व अल्पाहार लेने का अनुरोध किया, लेकिन उन्होंने मना कर दिया और निमग्न होकर परिक्रमा करते ही रहे। धन्य हैं प.पू. काकाजी महाराज जैसी दिव्य विभूति जिन्होंने ऐसे निष्ठावान भक्त-समाज का सर्जन किया और धन्य है–

ऐसा समाज कि जिसने अपने ईष्टदेव के प्रति भक्ति अदा करने का कोई मौका गवाँया नहीं।

७ मार्च को तो मुक्तों का जैसे तांता लग गया क्योंकि आज तो अखंड परिक्रमा की पूर्णाहुति होनी थी। सायं ७:०० बजे करीब प.पू. गुरुजी ने पूर्णाहुति की जय बुलवाई। प.भ. विजयपालजी के सुपुत्र चि. नितिन का इन्हीं दिनों रिश्ता पक्का हुआ था। प.भ. विजयपालजी ने जब से समाधि स्थल को लाल एवं सुनहरी रंग के कपड़ों एवं फूलों से सुसज्जित देखा था, तभी से उनके मन में विचार उठ रहा था कि ७ मार्च का अच्छा दिन है, सो उनके बेटे की शादी के फेरे, सत्संग के अन्य बच्चों की भाँति यहीं–समाधि स्थान पर हो जाएं। परंतु लड़की का इकलौता भाई अमेरिका में होने के कारण कहने से वे हिचक रहे थे। परंतु, प्रभु तो अपने भक्तों की इच्छा को सिर आँखों पर रखते हैं। लड़की पक्ष इस विधि के लिए तैयार हो गया और... परिक्रमा की पूर्णाहुति के बाद चि. नितिन एवं सौ.कां. डॉ. शैरी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की पुष्पसमाधि के सात फेरे ले लिए... तत्पश्चात्, प.पू. गुरुजी ने आशीषवर्षा करते हुए कहा कि *भले ही चि. नितिन की शादी बाद में सर्दियों में सांसारिक तरीके से होगी, पर असली शादी तो यही कही जाएगी।* प.पू. गुरुजी के आशीर्वचनों के बाद सभी ने प्रसाद लेकर प्रस्थान किया। चार दिन बाद ही **'योगी परिवार आनंदोत्सव'** यानि–प.पू. गुरुजी का ७४वाँ प्राकट्य पर्व आ ही रहा था। सो, बाहर से आए कई मुक्त तो तब तक के लिए दिल्ली रूक ही गए।

ताड़देव से बहे कुटुंबभाव में दिव्यता से ओतप्रोत हुईं, प.पू. गुरुजी की **'ज्योति फोई'** यानि– प.पू. ज्योति बहन, प.पू. देवी बहन, पू. डॉ. नीलम बहन एवं गुणातीत ज्योत की बहनें और इलेशभाई आदि भाई तो उत्सव की शुरुआत करने १० मार्च को ही दिल्ली आ गए। प.पू. गुरुजी के ७४वें प्राकट्य दिन के निमित्त प.पू. ज्योति बहन **गुणातीत ज्योत** से **७५ छोटे-छोटे केक** बनवा कर लाई थीं। सो, शाम को मंदिर में सभा के दौरान प.पू. गुरुजी ने केक कटिंग की।

११ मार्च की सुबह भी मुंबई-गुजरात के मुक्त आ पहुँचे। आज के ही दिन **प.पू. साहेबजी** एवं **पू. अश्विनभाई** अनुपम मिशन के मुक्तों के साथ आने वाले थे, किन्तु दोनों की तबियत यकायक नासाज़ होने के कारण वे नहीं आ पाए, लेकिन उन्होंने **प.भ. बारेन्द्रभाई** और मुक्तों को भेजा... १२ मार्च को तो मानो पूरा गुणातीत कुनबा एकत्रित हो गया! **प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई** पवई के करीब ५५ मुक्तों को साथ

लेकर दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देने आ गए। सांकरदा से प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की आज्ञा से **पू. निष्कामस्वामिजी, पू. स्नहेलस्वामिजी**, एवं पप्पाजी फार्म से **पू. आचार्यस्वामी, पू. धरमस्वामी** भी देर दोपहर तक मंदिर पहुँच गए।

दोपहर को प्रसाद लेने के बाद विश्राम करके सायं ५:०० बजे सभी मंदिर में इकट्ठे हो गए। ताड़देव के परिसर का माहौल भी कुटुंबियों के आगमन पर मानो अपनी खुशी ज़ाहिर कर रहा था। इस खुशी ने सायं ६:३० बजे के करीब मंदिर में पीछे के परिसर में सभा का आकार लिया, जब प.पू. गुरुजी ने पंडाल में प्रवेश किया। प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी एवं अन्य संतों के साथ स्टेज तक 'टमटम' में बैठ कर आए, वह दर्शन अद्‌भुत एवं अलौकिक था। प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि ये उत्सव इसीलिए होते हैं कि ऐसे उत्सवों में मिली अनोखी स्मृतियाँ हम भजन करते समय याद कर पाएँ।

प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई एवं सभी संतों-मुक्तों के सभा में अपने-अपने आसन पर विराजने के बाद सभा आरंभ हुई। आज की सभा के आरंभ से पहले एक ऐसी घटना घटी, जो सभी साधकों के लिए खूब प्रेरणादायी थी। मुंबई से प.पू. वशीभाई के पिताश्री के अक्षरनिवासी होने की खबर आई। पर उस दौरान स्टेज पर विराजमान प.पू. वशीभाई को देख कर कोई सोच भी नहीं सकता था कि उनके परिवार में ऐसी कुछ घटना बनी है। प.पू. वशीभाई की ऐसी कक्षा साधकों के लिए आदर्श रूप है।

आज मंच के बीचोंबीच लगी स्क्रीन पर लगातार, विभिन्न मुद्राओं में, प.पू. काकाजी के लुभावने दर्शन हो रहे थे। सभा में **पू. राकेशभाई**, एरु के **पू. कौशिकभाई, पू. यज्ञप्रियस्वामी, सांकरदा के पू. स्नेहलस्वामी** और **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब** ने अपने अनुभवों का लाभ दिया। प.पू. भरतभाई के वरद् हस्तों भजन संग्रह **'स्वर्ण स्वर - ८'** का अनावरण हुआ। सभा के अंत में प.पू. गुरुजी ने सभी केन्द्रों से आए मुक्तों को आशिष प्रदान करते हुए अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर की एवं प्राकट्य दिन निमित्त केक कटिंग की। सभा के बाद सभी ने प्रसाद लिया।

१३ मार्च–प.पू. गुरुजी का ७४वाँ प्राकट्य दिन! रोज की भाँति सुबह ६:५० पर प.पू. गुरुजी ने फिक्स्ड टाईम धुन करवाई... तत्पश्चात् सुबह ९:०० बजे महापूजा के लिए सभी मंदिर के हॉल में एकत्रित हुए। प.पू. गुरुजी, प.पू. निर्मलस्वामिजी, प.पू. भरतभाई, प.पू. वशीभाई, प.पू. बापु की निश्रा में पू. यज्ञप्रियस्वामी ने महापूजा संपन्न कराई। संतों-मुक्तों की हाज़िरी में हो रही महापूजा में हर एक मुक्त अपने भीतर में दिव्यता महसूस कर रहा था। महापूजा संपन्न होते ही मानो प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की दिव्य हाज़िरी की प्रतीति कराने के लिए प.पू. कोठारीस्वामिजी, पू. शास्त्रीस्वामिजी, पू. प्रेमस्वामिजी-पू. दासस्वामिजी-पू. संतस्वामिजी एवं करीब डेढ़ सौ संत हॉल में प्रविष्ट हुए। हॉल में चहुं ओर गेरूआ रंग छा गया, जैसे भगवा चादर बिछ गई हो!

सभा में **पू. गिरीशभाई (पवई), पू. बापु, पू. आचार्यस्वामी, पू. प्रेमस्वामी** ने माहात्म्य दर्शन कराया और **प.पू. निर्मलस्वामिजी** ने आशिष प्रदान किए... तत्पश्चात् सभी ने दोपहर करीब डेढ़ बजे, प्रसाद के लिए प्रस्थान किया।

ताड़ेदव के परिसर में स्वयंसेवक सायं की सभा

के आयोजन का प्रबंध करते हुए, निरंतर बज रहे भजनों की गूँज से अंतर में उमंग और उत्साह महसूस कर रहे थे। करीब साढ़े पाँच बजे प.पू. गुरुजी ने प.पू. कोठारीस्वामिजी-प.पू. निर्मलस्वामिजी एवं अन्य संतों के साथ सुशोभित पंडाल में प्रवेश किया। प्रवेश द्वार के ऊपर सूत्र लिखा था– *सतत मंत्रजाप यानि–धुन हर समस्या को हल करेगी ही।*

सभी संतों-मुक्तों के स्टेज पर विराजमान होने के बाद धुन-भजन के नाद से प.पू. गुरुजी के ७४वें प्राकट्योत्सव का शुभारंभ हुआ। प्राकट्योत्सव के निमंत्रण कार्ड की भाँति स्टेज की पृष्ठभूमि पर प.पू. काकाजी महाराज की धुन करती मूर्ति के दर्शन हो रहे थे। आस-पास अनेक देशों की करन्सी दिखाई पड़ती थी और लिखा था–**अक्षरधाम की करन्सी है–'भजन'!**

इसका तात्पर्य और भावना निम्न थी–

प्रत्येक देश की अपनी एक अलग करन्सी होती है; जैसे–भारत की रुपया, यु.एस.ए. की डॉलर, यु.के. की पाऊंड, युरोप की यूरो, अरब देशों की दीराम वगैरह...

*इसी तरह अक्षरधाम की करन्सी है – **'भजन'**!*

सो, हमारे मंदिर में सूत्र लिखा हुआ है–'सतत मंत्रजाप' हर समस्या को हल करेगा ही।

प.पू. काकाजी सदैव धुन करने का आग्रह रखते और... निरंतर भजन करते–कराते हुए प.पू. काकाजी के हमने दर्शन किए हैं। उन्हीं के नक्शेकदम पर चलते हुए, प.पू. गुरुजी को भी निरंतर भजन का ही एकमात्र आधार लेते हुए देख रहे हैं।

सो, प.पू. गुरुजी के इस जॅस्चर को जीवन का आधार बनाते हुए, ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज की मूर्ति का चिंतन करते हुए, एकमात्र भजन का ही आधार लेते हो जाएं–ऐसी आज के शुभ दिन भगवान स्वामिनारायण एवं सभी स्वरूपों के श्रीचरणों में प्रार्थना है।

सभा के आरंभ में **प.भ. वच्छराजजी**, हमारे वडील **प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब**, प.पू. काकाजी के समय के पुराने जोगी **प.भ. चाँदप्रकाशजी** एवं प.पू. साहेबजी की आज्ञा से आए **प.भ. बारिन्द्रभाई** ने प्रासंगिक उद्‌बोधन करके गुरु का माहात्म्य समझाया। प.पू. गुरुजी के सखा स्वरूप **पू. वशीभाई** माहात्म्य दर्शन कराते समय हरिधाम से आए डेढ़ सौ संतों को नतमस्तक हुए और **पू. दासस्वामिजी** ने गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ प.पू. गुरुजी के संबंध से सभी को सराबोर कर दिया।

प.पू. साहेबजी का **प्राकट्य दिन** धुलेन्डी के दिन होता है। अबकी बार धुलेन्डी ठीक एक सप्ताह के बाद यानि २० मार्च को थी। सो, प.पू. गुरुजी एवं दिल्ली के मुक्तों की हार्दिक इच्छा थी कि अब जब प.पू. साहेबजी उत्सव में दर्शन देने के लिए आ ही रहे हैं, तो उनका प्राकट्य दिन भी मना कर भक्ति अदा करने का मौका चूकें नहीं। अतः प.पू. साहेबजी के लिए बहनों ने हार बनाया था, प.भ. रवि आर्टिस्ट ने प.पू. साहेबजी की मूर्ति पेईन्ट की थी और प.पू. दीदी व प.भ. राकेशभाई ने भजन बनाया था। परंतु, अस्वस्थ होने के कारण प.पू. साहेबजी नहीं आ पाए थे; सो प.पू. साहेबजी को अर्पण करने के लिए बनाया गया हार एवं पेईन्ट की हुई मूर्ति प.भ. बारिन्द्रभाई को सौंप दी, ताकि **२० मार्च** को होने वाले **प.पू. साहेबजी** के **प्राकट्योत्सव** पर वे हमारी भावना उनको पहुँचा सकें। साथ ही, प.भ. राकेशभाई ने प.पू. साहेबजी के लिए बनाया गया भजन– ***श्रीजी के धारक साहेबजी,***

भागीदार योगी के साहेबजी... गाकर पंडाल में प.पू. साहेबजी की उपस्थिति का सभी को एहसास करवा दिया।

सभा के मध्य सभी उपस्थित मुक्तों व भक्तों को पू. सुहृद्स्वामी द्वारा बनाई गई कोल्ड कॉफी और वेफर्स का प्रसाद दिया गया। इस दौरान सभी ने पू. इलेशभाई व प.भ. राकेशभाई द्वारा भक्तिभरे हृदय् से गाए भजनों का आनंद लिया।

तत्पश्चात् केन्द्रों से आए मुक्तों ने, अपनी भावना व्यक्त करते हुए, प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किए और स्मृतिभेंट दी। पवई के भाइयों ने मणीनगर संस्था द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक, जिसमें तत्कालीन संतों ने श्रीजी महाराज के प्राकट्य से लेकर स्वधामगमन तक का कार्यकलाप तिथियों सहित समाविष्ट किया है, वो प.पू. गुरुजी को भेंट की। अक्षरज्योति की बहनों ने सभी की भावना व्यक्त करते हुए 'मोर' के डिज़ाईन का हार निम्न प्रार्थना के साथ प.पू. गुरुजी को अर्पण करने के लिए भेजा था–

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का एक प्रसंग हम सभी जानते हैं। एक बार एक शिकारी एक मोर पर अपना निशाना साध रहा था, पर हर बार वह निशाना चूक जाता था। दरअसल मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी वहीं विराजमान थे और उनकी दृष्टि उस मोर पर पड़ी थी। सो, वह शिकारी उस मोर को मार नहीं पाया। ***'मोर' पक्षी पर गुणातीत की दृष्टि पड़ी थी, तो मोर राष्ट्रीय पक्षी बना है और उसे कोई भी नहीं मार सकता।*** *प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी और सभी गुणातीत स्वरूपों की हम पर तो न केवल कृपादृष्टि है, बल्कि उन्होंने हमें अपनी गोद में बिठा लिया है। सो वी आर इन सेफ़ हॅन्ड्स और काल, कर्म, माया की सत्ता हम पर नहीं चल सकेगी।*

और... ये स्वरूप हमें गुणातीत भावना वाला साधु बनाना चाहते हैं, और वे हमें ऐसा बना कर ही छोड़ेंगे। उसके लिए जैसा कि अकसर प.पू. काकाजी-प.पू. पप्पाजी कहते, हम हँसते-हँसते चलें, हँसते-रोते चलें या रोते-रोते चलें, यह हम पर निर्भर है। पर, हम हँसते-हँसते ही इस राह पर चलते रहें, यह सुरुचि सदैव दृढ़ रहे – ऐसा आज के पवित्र अवसर पर आप हमें आशीर्वाद देना।

साथ ही गुणातीत ज्योत से आईं **पू. लीला बहन देसाई** का भी आज और **सौ. शीला आंटी** का १५ मार्च को जन्मदिन होने के कारण महिला विभाग में इन दोनों का जन्मदिन भी हार एवं केक अर्पण करके सॅलिब्रेइट किया।

हारविधि-केक अर्पण के बाद **प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. कोठारीस्वामिजी** ने आशीर्वाद प्रदान किए और आज के पवित्र दिन प. पू. कोठारीस्वामिजी ने श्री ठाकुरजी की आरती करके, प.पू. गुरुजी द्वारा संकलित व दिल्ली-मंदिर के प.भ. राकेशभाई एवं अनुपम मिशन के साधक भाइयों द्वारा गाई गई हिन्दी आरती एवं गुरुपरंपरा के श्लोकों का प्रारंभ करवाया। तत्पश्चात्, प.पू. गुरुजी द्वारा समय-समय पर दिए गए मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में **'मार्गदर्शिका-४'** का अनावरण पू. मल्कानी अंकल ने किया।

प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद पाने के लिए सब आतुर थे, पर कार्यक्रम में हस्तक्षेप करते हुए प.पू. गुरुजी ने सेवकों से कहा कि *तुम्हें जो भक्तिनृत्य इत्यादि करना है, वह पहले कर लो क्योंकि सरकारी आदेश के अनुसार बाद में लाउड स्पीकर नहीं चलाया जाएगा।* सो, प.पू. गुरुजी के कहे अनुसार, पहले तो प.भ. पुनीत मल्होत्रा द्वारा भक्तिभरे हृदय से तैयार

की गई विडियो क्लीप, जिसमें प.पू. काकाजी की विभिन्न मुद्राओं और प.पू. गुरुजी के हीरक महोत्सव के समय की स्मृतियाँ निहित थीं, सभी ने अवलोकन किया! इस वीडियो क्लिप को दिखाने का हेतु निम्न था–

प.पू. पप्पाजी के शब्दों में– काकाजी का साक्षात्कार दिन यानि गुणातीत समाज का विजय दिन– स्थापना दिन! गुरुहरि योगीजी महाराज की वृ़पा से प.पू. काकाजी महाराज ने अक्षरधाम का जो सुख स्वयं पाया, उसे उन्होंने सभी को बांटा– दोनों हाथों से सभी को दिया ही-लुटाया ही। उनकी बदौलत आज हम सभी का अस्तित्व है।

*इस वर्ष की ३ फरवरी के मंगलकारी दिन हम सभी ने ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती वर्ष में प्रवेश किया और आज उन्हीं के द्वारा उत्तर के मुक्तों को भेंट में मिले प.पू. गुरुजी अपने अमृत वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। तो, हम सब मिल कर गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृतियों और प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती के अवसर की स्मृतियों के साथ २०१२ में होने वाले '**योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव**' का स्वागत करें...*

*साथ ही... गुरुवर्य योगीजी महाराज ने १९६१ में अपने प्राकट्य दिन पर पहली बार पढ़े-लिखे जिन ५१ संतों को दीक्षा दी, उनमें से एक हमारे प्यारे-प्यारे प.पू. गुरुजी हैं। गुरुवर्य योगीजी महाराज ने **प.पू. गुरुजी** को लिख कर भी दिया है कि **गुणातीतानंदस्वामिजी ने जिन २०० मुक्तों को ब्रह्मविद्या पढ़ाई थी, उनमें से एक तुम** हो। अब की बार २९ मई २०११ को गुरुवर्य योगीजी महाराज के प्राकट्य के मंगलकारी दिन पर प.पू. गुरुजी को भागवती दीक्षा प्राप्त किए पचास वर्ष पूरे होंगे, तो ऐसे स्वर्ण अवसर का भी हर्षोल्लास के साथ हम सभी स्वागत करें।*

तत्पश्चात् प.पू. गुरुजी के प्राकट्योत्सव निमित्त बनाया नया भजन– ***'तेरी वाणी में काकाजी, तेरे वर्तन में काकाजी...'*** प.भ. राकेशभाई ने गाया। सत्संग के युवाओं ने भी, **काकाजी के साक्षात्कार के हीरक महोत्सव** का उद्घोष करते हुए, भक्तिनृत्य किया– ***'गुणातीत संत और अक्षरमुक्तों का है संग, हमारे जीवन में तुम भरते प्रभु का रंग...'***

अंत में, **प.पू. गुरुजी ने** आशिष प्रदान करते हुए सत्पुरुष के साथ के संबंध की कई **रहस्यमयी बातें बताईं और** अगले वर्ष **प.पू. काकाजी के साक्षात्कार के हीरक महोत्सव पर आने के लिए सभी को** न केवल **तहेदिल से न्यौता दिया**, बल्कि अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करते हुए यह भी कहा कि इस वर्ष अपने केन्द्र से आप यदि मात्र दस मुक्त आए हो, तो अगले वर्ष दस मुक्त केन्द्र में ठहरें और बाकी सब **'योगी परिवार की हीरक जयंती'** में यहाँ आएं... सभा के अंत में प.भ. मल्कानी अंकल ने आभार प्रकट करते हुए सभा का समापन किया और 'टमटम' में संतों के साथ बैठ कर दर्शन देते हुए प.पू. गुरुजी, प.पू. कोठारीस्वामिजी एवं प.पू. निर्मलस्वामिजी ने सभा मंडप से प्रस्थान किया... और इसी के साथ सभी ने प.पू. गुरुजी के अमृत वर्ष में प्रवेश किया!

(मार्च महीने में हुए उत्सवों के निमित्त मुक्तों द्वारा बताए गए अनुभवों एवं स्वरूपों की आशिष वर्षा का लाभ आप 'भगवत् कृपा' के इसी अंक एवं आगामी अंकों में ले पाएंगे।)

✡✡✡

5 मार्च, 2011 प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि की सभा

प.भ. समीरभाई

...ऐसी परिक्रमा का जो माहौल है और उसका जो आनंद है, वह मैं पहली बार ले रहा हूँ। यहाँ एन्टर होते ही ऐसा फ़ील होने लगा, मानो हम अक्षरधाम में ही बैठे हैं। अलग-अलग सेन्टर्स से आए हरिभक्तों, मुक्तों का दर्शन हो रहा है। बहुत दिव्य वातावरण है, अलग सी शांति महसूस हो रही है।

... आज परिक्रमा करते हुए मुझे एकदम से विचार आया कि हम पूजन का मौका तो ले सकते हैं– जैसे कि भक्तों का पूजन कर सकते हैं, संतों का पूजन कर सकते हैं। पर, जैसा एक पौराणिक कथा में सुना है कि कार्तिकजी को शिवजी-पार्वतीजी ने बताया कि यदि गौ की परिक्रमा कर ली, तो सारी पृथ्वी की परिक्रमा हो गई, ऐसा माना जाएगा और गणेशजी ने वैसा ही किया। यूँ हम तो अपने संतों व हरिभक्तों को बिठा कर उनकी परिक्रमा करने का मौका जिंदगी में कभी पाएंगे ही नहीं, क्योंकि उनमें स्वामी-सेवकभाव होता है... पर, आज एक साथ सभी परिक्रमा कर रहे थे। यदि हम परिक्रमा स्थल के आउटर राउन्ड में परिक्रमा करते हैं, तो आटोमॅटीकली संतों व भक्तों की परिक्रमा करने की हमारी भावना साकार हो जाती है। यूं हम काकाजी की तो परिक्रमा करते ही हैं, साथ ही संतों, मुक्तों और बहनों की भी परिक्रमा करके आनंद ले सकते हैं। बस ये जो एक भावना मेरे मन में आई, उसे लेकर मैंने परिक्रमा शुरू कर दी और उससे मुझे बड़ा सुकून मिला। **...गुरुजी हमेशा कहते हैं कि हमें कभी भी कोई उलझन हो या परेशानी हो, तो भक्तों को आगे रख कर यदि हम काम करें, तो हम उसमें से तुरंत बाहर निकल पाएंगे। तो भक्तों का ये जो माहात्म्य है– भक्तों की परिक्रमा करके दिल में जो आनंद उठा– भक्तों का वही माहात्म्य हमेशा दिल में भरा रहे, यही काकाजी से प्रार्थना की।**

एक छोटा सा इन्सीडन्स आपके साथ शेयर करूँगा। बीच में एक ऐसा क्रिटीकल पीरियड आ गया, जब महाराज ने मुझे व्यावहारिक रूप से थोड़ी-सी कसनी में डाला... मैं मन में बहुत परेशान था कि महाराज इस परिस्थिति में से कब बाहर निकालेंगे। उसी दौरान हमारे राकेशभाई की बेटी मानसी अपनी मॅरेज की शॉपिंग करने के लिए हमारे घर आई थी। मैं नाईट ड्यूटी करके घर आया था, सो थका हुआ था। पर, मानसी को कहीं ले जाना था। मानसी बोली भी – मासा, आप थके हुए हो, आप रहने दो। परंतु मैंने कहा– आप आए हो, ये मौका मुझे दोबारा तो मिलने वाला नहीं है। मुझे ये सेवा कर लेने दो। और... अमदावाद से जाते-जाते मानसी के मुँह से ऐसे ही अचानक निकल गया कि ये दिन भी जल्दी कट जाएंगे। जबकि मैंने तो उसके साथ कोई बात शेयर नहीं की थी। लेकिन उसने अपने आप जाते-जाते कहा कि मासा, महाराज कुछ न कुछ रास्ता जरूर निकालेंगे, आप भरोसा रखना और... पंद्रह दिन के बाद कॉल सेन्टर्स की जॉब छोड़कर मुझे बेटर ऑपॉर्च्युनिटी मिल गई और मैं ठीक से सेट हो गया। **भक्तों के अंदर ये कुटुंबभाव यहाँ पर डेवलप हुआ है। घर में जैसे हम एक दूसरे के दुःख-दर्द को फील करते हैं, वैसे ही भक्तों को अंदर-अंदर एक-दूसरे के दुःख में दुःख महसूस होता है और तब जो उनके अंदर से स्वाभाविक रूप से प्रार्थना निकल जाती है, वह प्रार्थना हमें अड़चनों से उबारने में बहुत हेल्पफुल हो जाती है।**

आज **गुरुजी के चरणों में यही प्रार्थना करनी है कि हम संतों में प्रभु का दर्शन करते हैं, प्रभु स्वरूप संत की महिमा भी समझते हैं, लेकिन भक्तों की महिमा समझ नहीं आ रही है। भक्तों की जो ताक़त है- भक्तों का जो स्वरूप है, उसे हम पहचानने लग जाएं और भक्तों में वही दिव्यभाव रखें, जो आपको हमसे रखवाना है–ऐसी प्रार्थना।**

प.भ. जयप्रकाश अंकल

...गुरुजी ने हमें हमारे पूर्व के संस्कारों को और बलिष्ठ करने का यह एक अवसर प्रदान किया है। पूर्व के संस्कार से मेरा मतलब है कि आज जो हम कर रहे हैं, कल के लिए वो हमारा पूर्व का संस्कार बन जाता है। **हमारे पूर्व के संस्कार इतने बलिष्ठ और पुण्यशाली रहे होंगे कि आज हम प.पू. गुरुजी के सामने बैठे हैं** और आज फिर हमें पुण्य मिल रहा है। यह भाग्यशाली दिन हमारे कल में पूर्व का संस्कार बन जाएगा। यूँ **हमारा कल भी कल्याणकारी था, आज भी कल्याणकारी है और आने वाला कल भी कल्याणकारी होने वाला है। हम ऐसे जोग में बैठे हैं।** कल आज और कल की ये कहानी है। कल भी अच्छा था, आज भी अच्छा है और कल भी अच्छा रहेगा। **प.पू. गुरुजी हम सबकी आध्यात्मिक चिन्ता तो करते ही हैं, पर हमारी सांसारिक–व्यावहारिक उदासी, मुसीबत या परेशानी भी कैसे टाल देते हैं, वो पता भी नहीं चलता...** पर उसके लिए मैं यही कहूँगा कि **इसके लिए हमें अपनी निष्ठा पक्की रखनी चाहिए...**

प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी

...इस परिक्रमा का आनंद लेने का मुझे पहली बार मौका मिला है। सच में यहाँ का जो माहौल है और यहाँ जो वाइब्रेशन्स आ रही हैं, उनसे खूब लाभ मिल रहा है। बचपन में हमारी ग्रांड मधर हमें गोवर्धन की परिक्रमा कराने के लिए ले जाया करती थीं। उस समय तो कुछ मालूम नहीं था कि परिक्रमा क्या होती है। बस जाकर सड़क पर चक्कर लगा कर आ जाते थे। लेकिन समीर ने परिक्रमा की महिमा बताई और **गुरुजी बताते हैं कि यहाँ की एक परिक्रमा एक यज्ञ के बराबर!** ऐसी कितनी ही चीजों का हमें मतलब ही नहीं समझ में आता था। बस एक प्रथा है, उसे हम फॉलो करते आ रहे थे। लेकिन जब से यहाँ गुणातीत समाज में गुरुजी से जुड़े हैं, इन सब चीजों का सही मतलब समझ में आया।

मेरे ख्याल में **आनंद एक ऐसी चीज है, जिसका कोई विरोधाभासी शब्द ही नहीं है। वह आनंद हमें यहाँ पर मिल रहा है।**

प.भ. महेश वर्माजी

पहली बार **जब गुरुजी के दर्शन हुए , मैं समझ गया कि मेरा उद्धार हो गया...** मेरे फाधर के साथ मैं हनुमान मंदिर जाता था। जब फाधर एक्सपायर हो गए, तो मेरे मन में ऐसा हुआ था कि मैं अब कभी कोई मंदिर नहीं जाऊँगा और सब जगह जाना मैंने बंद कर दिया। उसके बाद **गुरुजी के दर्शन किए, तब से मेरा दिल बड़ा खुश रहने लगा...** आपके फोन आते, मैं आपके फोनों का इंतजार करता। धीरे-धीरे मुझे अच्छा लगने लगा और आनंद आने लगा और **आज उनकी कृपा से मैं आनंद ले रहा हूँ...**

पू. मल्कानी अंकल

...बहत्तर घंटे की अखंड परिक्रमा रखी है। लास्ट ईयर भी रखी थी, जैसा कि गुरुजी ने बताया, फोर्टी एइट ऑवर्स की; बहुत आनंद आया था, अभी भी बहुत आनंद है। **जहाँ दिव्य स्वरूप बैठे हों, वहां आनंद हो ही जाता है। गुरुजी, आनंदी माई यहाँ बैठी हुई हैं, तो आनंद ही आनंद है।** मैं कभी सोचता हूँ कि **गुरुजी ने हम सब लोगों को-हरेक को अलग-अलग तरीके से बहुत कुछ दिया है।** मगर हम लोगों ने इन्डीविजुअली, कलेक्टीवली क्या लिया है? गुरुजी ने जो दिया है, उसमें से हम क्या संभाल पाए हैं–यह सबके लिए एक विचार करने वाली बात है...

बचपन से मेरे मन में एक छुपी इच्छा रहती थी। किसी तरीके से कहीं जिन्दगी में मुझे एक जादू मिल जाए। कई बार गुरुजी से बात भी की कि गुरुजी ऐसा कुछ जादू मिल जाए। तो **गुरुजी ने ऐसा मंत्र सिखा दिया कि अब किसी चीज की फ़िकर नहीं रहती।** ऊपर एक लाईन लिखी हुई है कि आप यहाँ आए हो, तो अब बेफ़िक्री! न्यू चॅप्टर ऑफ लाइफ, चाहे वो मल्कानी हो, वर्माजी हो या वच्छराज हो, सब को बेफ़िक्री है। यह फॅक्ट बात है। लेकिन यह मनवाना बहुत मुश्किल है। **यह तो एक अनुभव - एक्सपीरियन्स करने की बात है, महसूस करने की बात है।** आज हरेक को अपने-अपने तरीके से महसूस होता ही होगा।

मैं मंत्रजाप की बात कर रहा था। **शुरुआत में** मुझे एक समस्या आई। तो **गुरुजी ने बोला कि एक महीना सुबह चार बजे से पाँच बजे तक अनुष्ठान–भजन करो, तो आपका काम हो जाएगा।** सुबह उठने की आदत तो नहीं थी, मगर अलार्म लगा कर किसी भी तरह चार बजे उठ जाता और फिर भजन करता। तब एक घंटा बहुत मुश्किल से पास होता। एक महीने के बाद गुरुजी के पास आया और मैंने गुरुजी से कहा कि **मेरा कुछ नहीं हुआ। लेकिन जब मैंने अंदर झांक कर देखा, तो पाया कि मैंने आनंद से तो भजन किया ही नहीं था। एक्चयुअली मंत्र में कोई कमी नहीं थी, कमी थी मेरे मंत्र करने के तरीके में, इसलिए मैं मंत्र का आनंद नहीं ले पाया।** कहते हैं न – लाइक ए पैरेट आई युज़्ड टु कीप ऑन। आज इतने वर्षों के बाद मैं एक साफ़ दिल और सच्चाई से बोल सकता हूँ कि **गुरुजी ने मुझे लाइफ की ऐसी चीज दे दी, जो कमाल की है। अलादीन के लैम्प से भी बहुत अच्छी है। गुरुजी खुद जबरदस्त भजनीक हैं। गुरुजी का तरीका ही एक है कि जो भी प्रॉब्लम हो, उसके लिए भजन करो। गुरुजी ने हमेशा मंत्रजाप का ही आधार लिया है।** मेरा खुद का यह एक्सपीरियन्स है। अन्य लोगों को भी कहते हुए सुना है–जाओ, समाधि स्थान पर धुन करते हुए परिक्रमा करो या धुन करो। काकाजी या जो भी आपके गुरु हैं, उनका सिमरन करते हुए भजन करो। यह बहुत जरूरी है और उसके बिना काम नहीं बनेगा। **गुरु के सिमरन के बिना भजन करने से काम बनता ही नहीं। सबको गुरुजी यही बताते हैं।** जो-जो पकड़ लेते हैं, उन्हें और किसी चीज की कोई इच्छा भी नहीं होती। **मंत्रजाप में विश्वास आ जाए, गुरु में विश्वास आ जाए, फिर उसके बाद किसी चीज की इच्छा ही नहीं रहती।** यह विश्वास बनता है कि जो भी होगा प्रभु हमारे अच्छे के लिए करेंगे, बुरा तो करने वाले हैं ही नहीं...

प.पू. गुरुजी

कल शाम से हमने बहत्तर घंटे की परिक्रमा की शुरुआत की। पिछले साल जब यह तै किया था कि अगले साल अड़तालीस घंटे के बजाय बहत्तर घंटे की परिक्रमा करेंगे, तब कुछ ऐसा ख्याल नहीं था कि काकाजी महाराज के स्वधामगमन को पच्चीस साल पूरे हो रहे हैं। शायद एक-डेढ़ महीने पहले यह ख्याल पड़ा।

यह आशीर्वाद पाया हुआ स्थान है। जिन्होंने दर्शन किए थे, उन्हें तो वो सीन भी याद होगा कि पप्पाजी ने स्वयं यहाँ काकाजी का अस्थि कुंभ पधराया था। ज्योतिबहन तो बोली भी थीं कि यह हमारी '**अक्षरदेरी**' है। काकाजी, पप्पाजी जैसे ब्रह्मस्वरूप विभूतियों के पुष्पकुंभ यहाँ रखे हुए हैं।

काकाजी कैसी विज़नरी विभूति होंगी? अब तो अपने समाज के लिए रिलॅक्सेशन-लेटीट्यूट हो गई है कि भई गोंडल अक्षरदेरी में जाकर दर्शन व परिक्रमा भी कर आते हैं। लेकिन शुरुआत में वह एकदम डिफिकल्ट बन गया था। हमारा ग्रुप एकदम वहाँ जा नहीं सकता था। पर, माणावदर में जब देरी बनाई , तब काकाजी ने बापा की हाज़िरी में उन्हीं से आशीर्वाद मांगे थे कि यह देरी अक्षरदेरी-गोंडल जैसी ही हो। बापा ने तब कहा कि गोंडल अक्षरदेरी की मन्नत जैसे सिद्ध होती है, ऐसे ही यहाँ प्रदक्षिणा करने से होगी। ऐसी यह जगह-प.पू. काकाजी की पुष्पसमाधि है। पर, हमें यह भरोसा होना चाहिए। आजमा कर देखना, यहां पर कोई अपनी मन्नत रख कर परिक्रमा करेंगे, तो वो काकाजी-पप्पाजी सब पूरी करेंगे ही करेंगे और इससे भी अधिक यहाँ परिक्रमा करने से आपका पुण्य एकदम उदय हो जाएगा।

तो ये तीन दिन जो हर एक को परिक्रमा करनी है, वो उमंग से करना; ग्राम्यवार्ता करते हुए नहीं करना। ग्राम्यवार्ता यानि – बाजार आदि की बातें करना, वो तो सामान्य अर्थ है ही। पर, यदि सत्संग की भी व्यावहारिक ढंग से इधर-उधर की बातें हम करेंगे, वो भी ग्राम्यवार्ता है – यह विशिष्ट अर्थ है। सो, भीतर में 'स्वामिनारायण' मंत्र का जाप करते हुए परिक्रमा करेंगे, तो खूब महत्त पुण्य उदय हो जाता है। मंत्र जीवंत है, इस मंत्र को मूर्तिमान किए हुए संतों की परंपरा अखंडित जारी है। **अध्यात्म में हुई यह तकनीकी एडवांसमेन्ट अभी भी पकड़ में नहीं आई है।**

हम लोग भी भले ही बोलते हैं, पर इसकी यथार्थ महिमा समझ में आई हो, तो हमारी नजर इधर-उधर कहीं जा ही नहीं सकती। **जब तक मन इधर-उधर भी भटकता है, तो जरूर समझना कि प्रगट की हमारी निष्ठा में कसर है।** तो मैं कहता हूँ कि परिक्रमा करते हुए हम यही प्रार्थना करें कि हे महाराज, हमारी प्रगट की निष्ठा दृढ़ करवा दो। वो भी अपना एक बड़ा काम हो जाएगा।

दूसरी, एक खूब रहस्य की बात, जैसे महाराज ने भी कहा था – अति रहस्य एकान्त की एक प्यारभरी बात कहता हूँ कि हम सभी के 'तेजोमय' तन हैं। उस समय भी सभा में कौन बैठे होंगे? काठी लोग, कोळी लोग, खाचर लोग; संत भी होंगे। पर, महाराज ने कहा कि इन सब के शरीर तेजोमय हैं! आज भी यही बात खूब विश्वास से मानना कि इस मंदिर में आया हुआ प्रत्येक व्यक्ति खूब बलिष्ठ पुण्यशाली है। कारण – भगवान

स्वामिनारायण का संबंध होना कोई सामान्य बात नहीं है।

इन्होंने कल्याण की भावना भी कैसी उदात्त रखी? महाराज ने सोचा कि उनके संपर्क में तो कितने लोग आएगें। सो, बोले कि उनके संतों के संपर्क में भी जो कोई आए, उसका कल्याण होगा। फिर एक ब्रॉड आउटलुक दिया कि संत लोग भी कहाँ-कितना घूमेंगे? सो, बोले कि उनके भक्तों के संपर्क में जो आएं, उनका भी कल्याण। फिर बोले कि भक्तों के कॉन्टक्ट में भी कितने आएँगे? उनके घर का पानी पीए, खाना खाए, उसे खाना खिलाए, पानी पिलाए – उन सबका कल्याण। मैंने पहले भी एक बार बात की थी कि अहमदाबाद के पास अडालज में बावड़ी है। वह शिल्प की दृष्टि से भी मानी हुई व ऐतिहासिक बावड़ी है। उसे बनाने में उस समय लाखों रूपए का खर्चा हो गया था। विचरण के दौरान महाराज उस बावड़ी में स्नान करने के लिए गए होंगे। बावड़ी पर लिखा शिलालेख सद्गुरु नित्यानंदस्वामिजी ने पढ़ा कि जिस रानी ने वह बावड़ी बनवाई, उसने इसे अपने नाम या कीर्ति के लिए नहीं बनवाई है। वो केवल इसलिए बनवाई है कि कभी कोई ऐसे पवित्र साधु इस बावड़ी में स्नान करें, तो उसके फलस्वरूप रानी का मोक्ष हो जाए! संतों ने महाराज को जब यह बात बताई, तब महाराज तो स्नान करके निकल चुके थे। पर, यह सुन कर महाराज दोबारा संतों के साथ बावड़ी में नीचे उतरे और फिर स्नान किया। फिर महाराज ने कहा कि रानी की क्या बात करते हैं? रानी का तो मोक्ष हो चुका; पर जो बैल, गाड़े वगैरह इसे बनाने के कार्य में जोते गए होंगे, उन सबका भी मोक्ष! जिन मजदूरों ने काम किया होगा, उनका भी मोक्ष! फिर चलते-चलते कहा कि ये बैलगाड़े के पहिए जब फिरे होंगे, उसमें जो जीव-जन्तु नीचे दब कर मर गए होंगे, उन सबका भी कल्याण! कहते हैं कि बाद में जोगी महाराज भी एक बार स्नान करने के लिए वहाँ गए थे। तब उन्होंने आशीर्वाद दिए कि इस बावड़ी के ऊपर से कोई पक्षी भी उड़ कर जाएगा, उसका भी कल्याण! इस तरह **प्रगट की ये फिलोसॉफी बहुत बड़ी चीज है।** जिसे कहते हैं कि **यह मॅथेमेटिक्स अपनी समझ में नहीं आएगा।**

काकाजी भी ऐसी बातें कहते थे – तब उनकी बातों पर हमने कोई ध्यान भी नहीं दिया। वे कहते कि – हज़ारों टन कोयला-कार्बन जलाने पर जो हीट-एनर्जी मिले, इतनी एनर्जी कार्बन के सिर्फ एक एटम स्प्लीट करने पर उपलब्ध होती है। इसी तरह मंत्र 'स्वामिनारायण' बोलो, 'राम' बोलो, 'कृष्ण' बोलो, 'माता' बोलो या 'महादेव' बोलो, गायत्री मंत्र बोलो – एक मंत्र का फल एक। पर, जैसे कि काकाजी बात करते थे कि तुम जिस इष्टदेव का भजन करो, वो इष्टदेव एक बार मानव स्वरूप में धरती पर आए होने चाहिएँ। बाईस लाख साल पहले रामचंद्रजी मानव स्वरूप में पृथ्वी पर आए। आज तीव्रता से राम के मंत्र की पुकार करो, अर्चीमार्ग से उन्हें पहुँच जाएगा। श्री कृष्ण का मंत्र भी कोई बोलेगा, तो अर्चीमार्ग से श्री कृष्ण को पहुँचेगा। लेकिन वही मंत्र ऐसे संत, जिन्होंने कृष्ण चेतना प्रगटाई हो – जैसे श्री कृष्ण के बाद शुकदेवजी, उनकी स्मृति के साथ जाप किया जाए, तो फिर उसका फल अनन्य गुना प्राप्त होगा। शुकदेवजी के संबंध से श्री कृष्ण का नाम रटन किया-भागवत् सुना तो परीक्षित का सात दिन में मोक्ष हो गया।

यह एक अनोखी बात - शॉर्ट कट बताया। कम्प्यूटर जैसी बात हो गई।

अभी कोई बोला न कि जो काम कई दिनों में हो, वो केवल मिनटों में पूरा होने लग गया। इस तरह कोई भी मंत्र बोलोगे, उसकी पोटेन्शियालिटी के मुताबिक फल तो मिलेगा। पर, वही मंत्र ऐसे लिविंग संत–जैसे आज हरिप्रसादस्वामी, साहेब, प्रमुखस्वामी महाराज की स्मृति के साथ-उनकी आज्ञा से उन्हें आगे रखकर करोगे तो एक मंत्र का फल करोड़ों गुना। यह बात अगर हमारे भीतर बैठी होगी, तो जैसा कि हमने कहा कि एक परिक्रमा करें तो एक-एक कदम पर एक-एक यज्ञ का फल मिलता है- वो बैठ जाएगी।

हम नए-नए सत्संग में आए तब सुना था कि ताड़देव की सीढ़ी के चौरासी स्टेप्स हैं और ये चौरासी स्टेप्स जिसने चढ़े, उसकी चौरासी कट गई। तब हम तो यही समझते थे कि महिमा की बातें हैं। लेकिन पता नहीं काकाजी के साथ का हमारा पुराना संबंध था या ऐसे कोई लगाव के कारण; लेकिन ये सारी बातें मेरे दिमाग़ में इसलिए बैठ गई क्योंकि मेरे दिमाग़ में यह फिट था कि भले मुझे समझ नहीं आती, लेकिन बात इनकी ही सच हो सकती है। मैंने पहले भी कई बार ये कहा है कि जोगी बापा, काकाजी, पप्पाजी या बा ऐसी कुछ बात करें, तो मुझे लगता कि ये बात ऐसी हो जाएगी।

ऐसी चीजों में कभी खुशी भी आ जाती थी, तो कभी गम भी आ जाता था। मैंने कभी भी काकाजी को सबके सामने बा को डाँटते हुए नहीं देखा था। एक बार का प्रसंग याद करता हूँ तो विचार आता है कि ओहो काकाजी को मेरे प्रति कैसा और कितना लगाव होगा कि मेरे कारण बा को भी यूँ डांटा। मुझे पहले से ही खूब पैसा कमाने की इच्छा। तो मैं हमेशा बा के पीछे लगा रहता था कि बा आशीर्वाद दो कि पैसे मिलें। रोज ही एक ही बात सुनते हुए एक दिन बा गुस्से में बोलीं–जा, रड्या तने पैसा- बैसा कांई (कुछ) नहीं मिलेगा। मैं तो सोचता था कि कोई बात रिपीटेडली कहूँगा, तो एक दिन वे कह देंगी कि जा मली जशे (मिल जाएंगे)। इसके बजाय इन्होंने तो उल्टा ही कह दिया। वो कहते हैं न कि करने गए थे कंसार और हो गया थुला। तो मुझे लगा कि बा ने ऐसा कह दिया अब तो बेड़ा गर्क हो ही गया। बहुत डूबा हुआ बा के यहाँ से छः नंबर में प.पू. काकाजी के पास जाकर बैठा। जैसे नक्षु को एक दिन सब जगह से डॉट पड़ी; मैंने डांटा, दीदी ने भी डांटा, फिर बहनों ने भी उसे दुत्कार दिया। तो चुपचाप नवीनभाई के पास जाकर, मुँह लटका कर बैठ गया था। वैसे ही मुझे भी हुआ कि आज तो मुसीबत हो गई। जहाँ काकाजी बैठे थे, वहां जाकर बैठा। काकाजी ने तो तुरंत भांप लिया। मुझसे दो-चार बार पूछा भी–क्या हो गया? क्यों मुँह लटक गया? खूब पूछा तो मैंने कहा कि बा के पास गया था और ये सारी बातें हुईं। इतने में बा एंटर हुईं। तो, ओहो काकाजी ने बा को खूब डांटा कि तुम इसे मना कर ही कैसे सकती हो कि तूझे पैसा नहीं मिलेगा। मुझे भी हुआ कि मैंने खामखाह काकाजी से बात कर दी, बा को सुनना पड़ा। काकाजी ने कितना डांटा होगा कि बा भी दो-चार बार फिर बोलीं भी–मैंने ब्राह्मण के इस लड़के को कैसे ऐसा कह दिया। गुणातीतानंदस्वामी की बातों में है कि हम समझते हैं कि हमें साधु के साथ खूब लगाव है, लेकिन साधु को हमारे साथ कई गुना लगाव होता है– वो हमें पता नहीं होता है। ऐसे प्रसंगों से वो पता लग जाता है।

हाँ, तो मेरा यह कहना था कि सभा में बैठे हम सब ऐसे तेजोमय हैं। आप कहोगे ऐसा नज़र तो आता

नहीं, पर वो महाराज ने दबा के रखा हुआ है। इसे हक़ीक़त मानना। मैंने कई बार कहा है कि कई चीजें हम नहीं मानते इसलिए महाराज को एक्सपोज़ करके दिखानी भी पड़ती हैं।

बहुत समय पहले मैंने एक बात कही थी कि मंदिर में लक्ष्मीजी तो आने को तैयार हैं, लेकिन काकाजी ने उन्हें गंदे नाले से आगे आने के लिए मना कर रखा है। मैं बोलता था कि जाकर देखना, लक्ष्मीजी ग्रीन साड़ी पहनी खड़ी हुई होंगी। महाराज ने क्या किया कि उसी समय कैलाश शर्माजी आए थे। उन्होंने बताया कि मैं आ रहा था तो नाले पर ग्रीन साड़ी पहने एक औरत खड़ी थी और उसने कहा कि मुझे अशोक विहार मंदिर जाना है, आप ले चलो। कैलाशजी ने कहा वहां मंदिर है तू चली जा। वह बोली कि नहीं, आप साथ में चलोगे तभी मैं जाऊँगी। इस पर कैलाशजी अलर्ट हो गए। उन्होंने कहा अगर ऐसी बात है तो मुझे तो स्वामी से पूछना पड़े कि मैं इसको ले आऊँ। वे हाँ कहेंगे तो मैं ले जाऊँगा। हम यह बात कर ही रहे थे कि आकर कैलाशजी ने ये बात कही। मैंने कहा भी कि इसमें पूछना क्या, साथ में ले आते, वो लक्ष्मीजी खड़ी थीं।

मेरा कहना क्या है कि ऐसी बातें हमारे दिमाग़ में बैठें ऐसी हैं नहीं। लेकिन हक़ीक़त यह है कि जो विश्वास रखकर के चलने लग पड़ें, उनका बेड़ा पार ही नहीं होगा, बल्कि वे निहाल हो जाएंगे। पर भरोसा हमें रखना पड़ता है और वो **मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से पार का भरोसा रखना चाहिए।** काकाजी ने एक कागज में लिखा था– ***तुमने मेरे जैसी मिस्टीक व्यक्ति विभूति का भरोसा किया, तो तुम निहाल हो जाओगे।***

तो ये जन्मदिन तो ठीक, हम सबको इकट्ठे होकर आनंद करना है। कोई प्रार्थना-लौकिक संकल्प भी हमें करने नहीं हैं; क्योंकि वो काम तो हमारे कहे बिना ही महाराज ने अपने जिम्मे ले लिया है। रोटी, कपड़ा और मकान तो हमारे बिना कहे महाराज ने दिया हुआ है। उन्होंने कहा हुआ है कि मेरे आश्रित इससे कभी दुःखी न हो। अलौकिक संकल्प करके हमें ढोंगबाजी में जाना नहीं है। बड़े महात्माओं का जेस्चर करके ये ढोंगी जीवन हमें नहीं जीना है। बाकी रहा आध्यात्मिक संकल्प कि हे महाराज, आपके स्वरूप की हमें तत्त्व से पहचान करा दो। स्वरूप की वो पहचान क्या करनी है कि पल-पल हमारे आगे-पीछे-भले नज़र नहीं आते, लेकिन वे काम कर रहे हैं। खूब विश्वास से, भरोसे से मानना कि यहां जो हम बैठे हैं, इन सबके ऊपर काल, कर्म, माया की हकूमत नहीं है। डायरेक्ट कंट्रोल ऐसे संत का है... **बोलते तो सब हैं कि कर्ता-हर्ता प्रभु हैं, ऊपर वाला। पर 'ऊपर वाला' नहीं, जो यहां नीचे हमने काकाजी के रूप में देखे वो हैं।** यह मानने लग जाएंगे, तो फिर नज़र भी आएंगे। इसके फलस्वरूप हम निश्चिंत हो जाएंगे। आप लोगों ने भी महसूस किया होगा कई ऐसी घटनाएं बनती थीं, तो हम तुरंत डिस्टर्ब हो जाते थे, चिन्ता में चले जाते थे। अब धीरे-धीरे इम्यूनिटी आने लग गई। भले समझ नहीं आता है, पर जैसे पप्पाजी बोलते थे– *कुछ बिगड़ने वाला नहीं है...* यह भरोसा बैठ गया है। तो परिक्रमा करते-करते एक ही संकल्प करने जैसा है कि हे महाराज, आपके स्वरूप का हमें विज्ञान हो, ऐसे आशीर्वाद दो।

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

✡✡✡

शेष अगले अंक में...

भजन

(राग– मेरा जूता है जापानी...)

तेरी वाणी में काकाजी, तेरे वर्तन में काकाजी,
तेरे संकल्प में काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी...

अनंत ऐश्वर्य होते हुए भी, सेवक बन कर रहते
सेवक बन कर रहते
साकार योजना करने काका की, परिश्रम अविरत करते
परिश्रम अविरत करते
तेरे भजन में हैं काकाजी, तेरी मूर्ति हैं काकाजी,
तेरी स्मृति में काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी...

सांगोपांग काकाजी को धारे, जीवनशैली हुबहु है
जीवनशैली हुबहु है
जगाए गुणातीत अस्मिता, साधुता भी ऐसी है
साधुता भी ऐसी है
तेरी दौलत तो काकाजी, तेरी हुंडी बस काकाजी,
हुकुम का इक्का बस काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी...

अक्षरधाम के कुशल कारीगर, मिले काकाजी ऐसे
मिले काकाजी ऐसे
अद्भुत चैतन्यशिल्पी जिन्होंने, घढ़ दिए गुरुजी जैसे
घढ़ दिए गुरुजी जैसे
देखें मुक्तों में काकाजी, प्रेरक कर्ता बस काकाजी,
कर ले आपको जो राजी, पा ले बख़्शिश में काकाजी!

तेरी वाणी में काकाजी, तेरे वर्तन में काकाजी,
तेरे संकल्प में काकाजी, तेरे रोम रोम काकाजी।
तेरी वाणी में काकाजी...

✡✡✡

याद कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में **प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार को 60 वर्ष** पूर्ण हो रहे हैं,
सो, अब 2012 की 3, 4 एवं 5 फरवरी के तीन दिन
'योगी परिवार हीरक आनंदोत्सव' के रूप में मनाएंगे
और...
तब साथ ही प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव भी मना लेंगे।
तो, प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार की हीरक जयंती एवं
प.पू. गुरुजी के 75 वें प्राकट्योत्सव निमित्त
प.पू. काकाजी और प.पू. गुरुजी के अनुभव,
जो आपको भीतर तक छू गए हों,
उन्हें हिन्दी/अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते* पर भेजते रहें,
जिससे कि 'भगवत् कृपा' के इस स्तंभ के अंतर्गत
वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।
सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

'योगी परिवार का अद्भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!'

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે **પ.પૂ. કાકાશ્રીના સાક્ષાત્કારને ૬૦ વરસ** પૂરા થાય છે,
તેથી હવે ૨૦૧૨ની ૩, ૪ ને ૫ ફેબ્રુઆરીના ત્રણ દિવસ
'યોગી પરિવાર હીરક આનંદોત્સવ' રૂપે ઊજવીશું;
અને...
ત્યારે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ પણ ભેગો ઊજવી લઈશું.
પ.પૂ. કાકાશ્રીના સાક્ષાત્કારની હીરક જયંતી અને પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે
પ.પૂ. કાકાશ્રી અને પ.પૂ. ગુરૂજીના અનુભવ-પ્રસંગો
જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય,
એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો,
જેથી 'ભગવત્ કૃપા'ના આ સ્તંભ હેઠળ એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.
સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o 'भगवत् कृपा'
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, 'ताड़देव', काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार-III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

निमंत्रण

आइए,

12 जून 2011, रविवार सायं : 6:30 से 9:15

प.पू. गुरुजी की निश्रा में –

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के 93वें प्राकट्योत्सव

एवं

'अनुष्ठान शिविर' की पूर्णाहुति के निमित्त

'ताड़देव', श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर– अशोकविहार में

इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रहकर दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लेकर स्वयं को धन्य करें.....

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	14.5.2011,	शनिवार	—	एकादशी, व्रत **अनुष्ठान शिविर का मंगल प्रारंभ** **शिविर का समय – सायं 7:00 से 9:00**
(2)	दि.	16.5.2011,	सोमवार	—	नृसिंह जयंती, फलारी व्रत
(3)	दि.	28.5.2011,	शनिवार	—	एकादशी, व्रत ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(4)	दि.	**29.5.2011**,	**रविवार**	—	**ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि,** **प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि की स्वर्णजयंती**
(5)	दि.	1.6.2011,	बुधवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(6)	दि.	11.6.2011,	शनिवार	—	भगवान स्वामिनारायण की स्वधामगमन तिथि
(7)	दि.	12.6.2011,	रविवार	—	**गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्योत्सव एवं अनुष्ठान शिविर की पूर्णाहुति** ***(सायं 6:30 से 9:15 मनाएंगे।)*** भीम एकादशी, व्रत
(8)	दि.	15.6.2011,	बुधवार	—	वटसावित्री
(9)	दि.	27.6.2011,	सोमवार	—	एकादशी, व्रत
(10)	दि.	3.7.2011,	रविवार	—	रथयात्रा
(11)	**दि.**	**11.7.2011**,	**सोमवार**	—	**देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ**

प.पू. गुरुजी के ७४वें प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

प.पू. गुरुजी के ७४वें प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

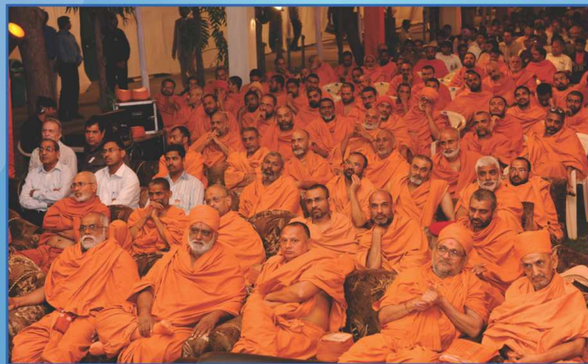

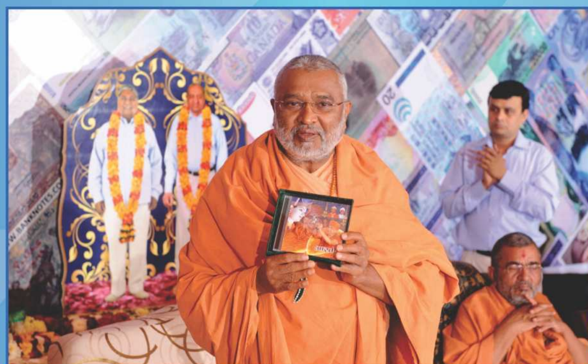

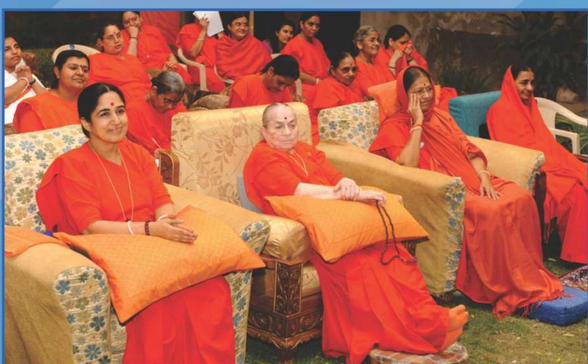

Air Mail

R.N.I. 28971/ 77

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched Bimonthly

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :-*

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI

'Taad-dev', Kãkãji Lane, Swãminãrãyan Mãrg, Ashok Vihãr-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052